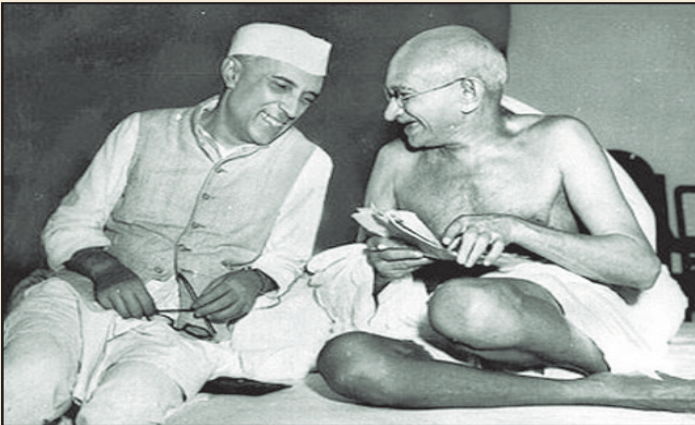


महात्मा गांधी स्वतंत्र भारत के पिता

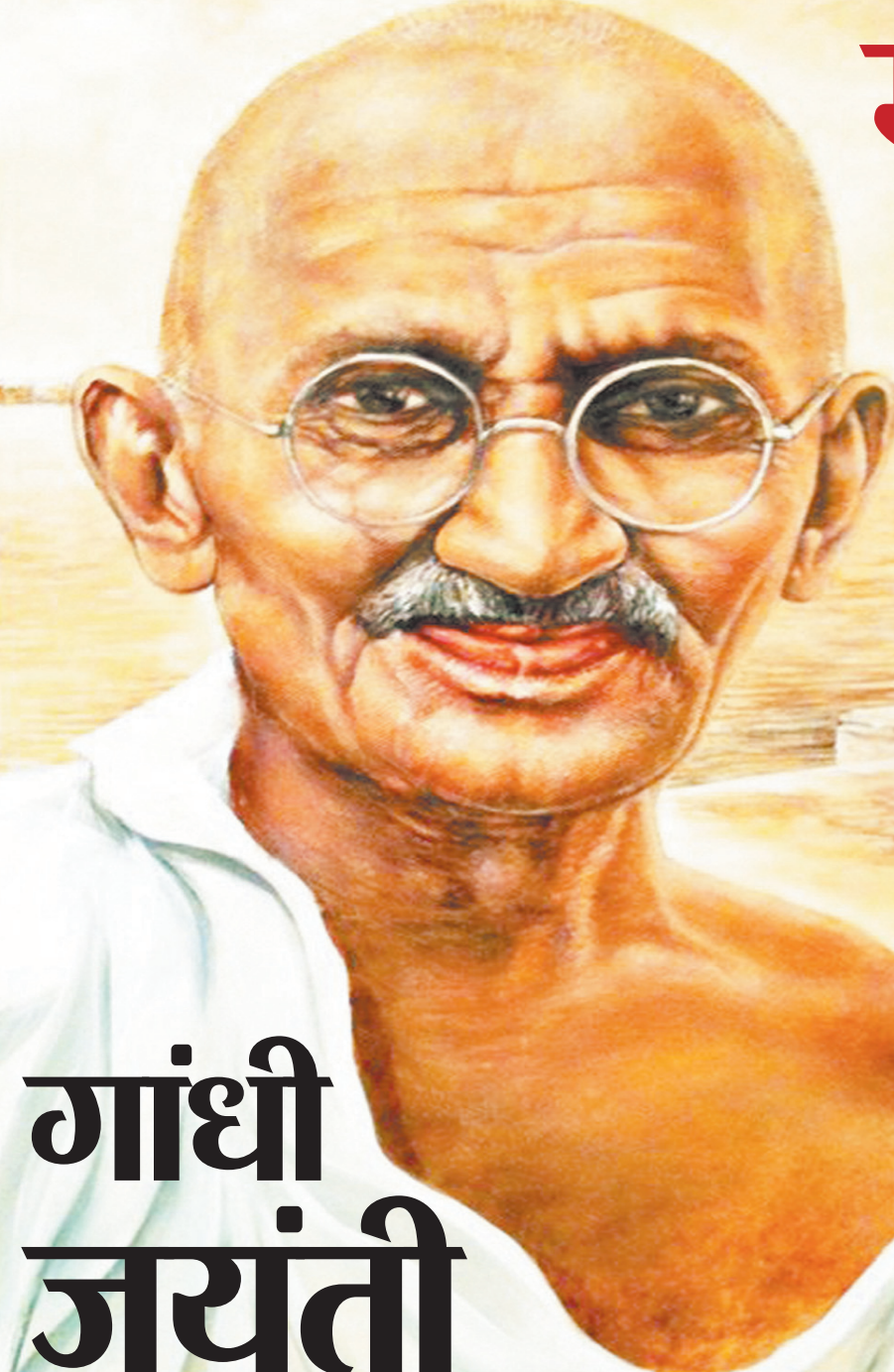
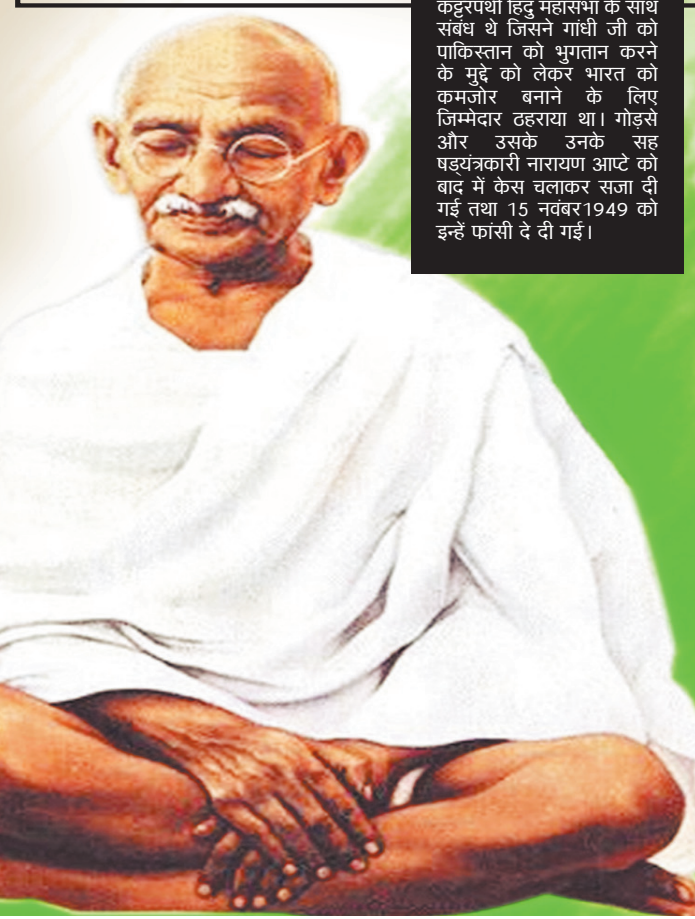
भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचंद गांधी जिन्हें बापू या महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, के जन्म दिन 2 अक्तूबर को गांधी जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। वस्तुतः गांधीजी विश्व भर में उनके अहिंसात्मक आंदोलन के लिए जाने जाते हैं, और यह दिवस उनके प्रति वैश्विक स्तर पर सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है ।



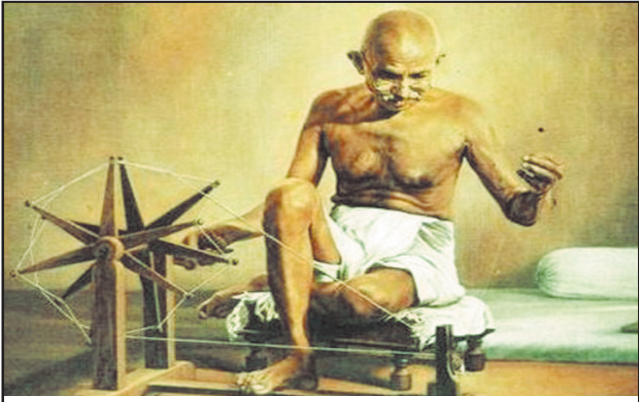
गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहे। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरुषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। नही 31 दिसंबर 1929 , भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है. 26 जनवरी 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय सगदनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे 12 मार्च से 6 अप्रैल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।
द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो – द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़ने नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड, आरंभ में गांधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया किंतु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों के परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गांधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से तड़पें पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनगी। जैसे जैसे युद्ध बढ़ता गया गांधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गांधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था जो भारतीय सीमा से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था। गांधी जी के दूसरे नंबर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है जबकि कुछ मानते थे कि गांधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आंदोलन बन गया जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख्या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नहीं देंगे तब तक भारत को तत्काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।

स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

गांधी जी ने 1946 में कांग्रेस को ब्रिटिश केबीनेट मिशन के प्रस्ताव को दुकराने का परामर्श दिया क्योंकि उसे मुस्लिम बहुलता वाले प्रांतों के लिए प्रस्तावित समूहोकरण के प्रति उनका गहन संदेह होना था इसलिए गांधी जी ने प्रकरण को एक विभाजन के पूर्वाभ्यास के रूप में देखा। हालांकि कुछ समय से गांधी जी के साथ कांग्रेस द्वारा मतभेदों वाली घटना में से यह भी एक घटना बनी। चुंकि नेहरू और पटेल जानते थे कि यदि कांग्रेस इस योजना का अनुमोदन नहीं करती है तब सरकार का नियंत्रण मुस्लिम लीग के पास चला जाएगा। 1948 के बीच लगभग 5000 से भी अधिक लोगों को हिंसा के दौरान मौत के घाट उतार दिया गया। गांधी जी किसी भी ऐसी योजना के खिलाफ थे जो भारत को दो अलग अलग देशों में विभाजित कर दे भारत में रहने वाले बहुत से हिंदीओ और सिक्खों एवं मुस्लिमों का भारी बहुमत देश के बंटवारे के पक्ष में था। इसके अतिरिक्त मुहम्मद अली जिन्ना, मुस्लिम लीग के नेता ने, पश्चिम पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और ईस्ट बंगाल में व्यापक सहयोग का परिचय दिया। व्यापक स्तर पर फैलने वाले हिंदू मुस्लिम लड़ाई को रोकने के लिए ही कांग्रेस नेताओं ने बंटवारे की इस योजना को अपनी मंजूरी दे दी थी। कांग्रेस नेता जानते थे कि गांधी जी बंटवारे का विरोध करेंगे और उसकी सहमति के बिना कांग्रेस के लिए आगे बढ़ना बरांभव था चुंकि पाटटी में गांधी जी का सहयोग और संपूर्ण भारत में उनकी स्थिति मजबूत थी। गांधी जी के करीबी सहयोगियों ने बंटवारे को एक संयत्तम उपाय के रूप में स्वीकार किया और सदापर पटेल ने गांधी जी को समझाने का प्रयास किया कि नागरिक अशांति वाले युद्ध को रोकने का यही एक उपाय है। मजबूर गांधी ने अपनी अनुमति दे दी।



गांधी जयंती आत्ममूल्यांकन का दिन



मिल सकती है, संपदा, संपत्ति नहीं। वैचारिक धरातल में यह खोखलापन एक दिन या एक माह या एक वर्ष में नहीं आ गया। जान-बूझकर धीरे-धीरे और योजनाबद्ध ढंग से गांधी सिद्धांतों को भिटाया जा रहा है क्योंकि यह मौजूदा स्वार्थों में सबसे बड़े बाधक हैं। गांधी सिद्धांतों को भिटाने की इस गतिविधि को देखा नहीं गया, ऐसा नहीं है। सब चुप हैं क्योंकि अपना-अपना लाभ सभी को चुप रहने के लिए प्रेरित कर रहा है। आपसीर पर जन्मदिन या जयंती के दिन आस्था के फूल अर्पित करने की परंपरा है। इस दिन कड़वी बातों को कहने का रिवाज नहीं है। यदि इस रिवाज को तोड़ा जा रहा है, तो मजबूरी के दबाव को समझे जाने की आवश्यकता है। यह राष्ट्र नेताओं को महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर कीचड़ छालने की अनुमति कैसे दे रहा है, क्यों दे रहा है? यह कैसी सहिष्णुता है जो राष्ट्र की बुनियादी विचारधारा को मटियामेट करने पर आमाद है? कहते हैं कि जो राष्ट्र अपने चरित्र की रक्षा करने में सक्षम नहीं है, उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता है। क्या परमाणु बम भारतीयता की रक्षा कर पाएगा? दरअसल, यह भुला दिया गया है कि पहले विश्वास बनता है, फिर श्रद्धा कायम होती है। किसी ने अपनी जय-जयकार करवाने के लिए क्रम उलट दिया और उल्टी परंपरा बन गई। अब विश्वास हो या नहीं हो, श्रद्धा का प्रदर्शन जोर-शोर से किया जाता है। गांधीजी भी श्रद्धा के इसी प्रदर्शन के शिकार हुए हैं। उनके सिद्धांतों में किसी को विश्वास रहा है या नहीं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। जयंती और पुण्यतिथि पर उनकी कसमें खाकर चाहवाही जरूर लुटी जा रही है। गांधीजी के विचार बेचने की एक वस्तु बनकर रह गए हैं। वे छप्पे शब्दों से अधिक कुछ नहीं हैं। इसलिए ही गांधीजी की जरूरत आज पहले से कहीं अधिक है। इस जरूरत को पूरा करने की सामर्थ्य वाला व्यक्तित्व दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है। हर कोई चाहता है कि आदर्श और मूल्य इतिहास में बने रहे और इतिहास को वह पूरता भी रहेगा। परंतु अपने वर्तमान को वह इस इतिहास से बांधकर रखना चाहता है। अपने लालच की रक्षा में वह गांधी की रोज हत्या कर रहा है, पल-पल उन्हें मार रहा है और राष्ट्र भीड़ की तरह तमाशबीन बनकर चुपचाप उसे देख रहा है। शायद कल उनमें से किसी को यही करना पड़े। अपने हितों की विरोधी चीजों को इतिहास में बदल देने में भारतीयता आजादी के बाद माहिर हो चुकी है। वर्तमान और इतिहास की इस लड़ाई में वर्तमान ही जीतता आ रहा है क्योंकि इतिहास की तरफ से लड़ने वाले शेष नहीं हैं। आज गांधी जयंती है। गांधीजी की प्रतिमा के सामने आंच मूंदकर कुछ क्षण खड़े रहने वाले क्या यह पश्चाताप कर रहे होंगे कि वे गांधीजी के बताए रास्तों पर क्यों नहीं चल रहे हैं? नहीं, वे यह कतई नहीं सोच रहे होंगे। तब वे मन ही मन क्या कह रहे होंगे? सोचिए और उस पर मनन कीजिए। गांधी जयंती पर यही बड़ा काम होगा।

गांधीजी ने बजाया था सत्याग्रह का बिगुल

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारतवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए गांधी जी नेशनल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की। पहली बार सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग किया और विजय भी पाई। इस प्रकार सन्? 1914-15 में गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से वापिस भारत लौटे, तब तक इन विचारों और जीवन-व्यवहारों में आमूल-मूल परिवर्तन आ चुका था।

भारत लौटकर कुछ दिन गांधी जी देश का भ्रमण कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेते रहे। फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में वचन देकर भी अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे गांधी जी और भी चिढ़ गए और अंग्रेजी कानूनों का बहिष्कार और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। भारतवासियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले रोलट एक्ट का स्थान-स्थान पर विरोध-बहिष्कार होने लगा। सन 1919 में जलिया-वाला बाग में हो रही विरोध-सभा पर हुए अत्याचार ने गांधी जी की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। सो अब ये समूचे स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर सम्हाल खुलम-खुल्ला संघर्ष में कूद पड़े। इनका संकेत पाते ही सारे देश में विरोधी आंदोलनों की एक

खादी को महत्व देना, सर्वधर्म-समन्वय और विशेषकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रचार इनके द्वारा आरंभ किए गए अन्य प्रमुख सामाजिक सुधारात्मक कार्य माने गए हैं। इस प्रकार के स्वतंत्रता दिलाने वाले प्रयासों के लिए अक्सर बीच-बीच में इन्हें जेलयात्रा भी करनी पड़ती। सन 1931 में इंग्लैंड में संपन्न गोलमेज कान्फेंस में भाग लेने के लिए गांधी जी वहां गए, पर जब इनकी इच्छा के विरुद्ध हरिजननों को निर्वाचन का विशेषाधिकार हिन्दुओं से अलग करके दे दिया, तो भारत लौटकर गांधी जी ने पुनः आंदोलन आरंभ कर दिया। बंदी बनाए जाने पर जब ये अनशन करने लगे, तो सारा देश क्षुब्ध हो उठा। फलतः ब्रिटिश सरकार को गांधी जी के मतानुसार हरिजननों का पृथक निर्वाचनाधिकार का हट छोड़ना पड़ा।

मोहनदास करमचंद गांधी (2 अक्तूबर 1869 – 30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह – व्यापक सविनय अवज्ञा के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव संपूर्ण अहिंसा पर रखी गई थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया।उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत- महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द जिसे सबसे पहले रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रयोग किया और भारत में उन्हें बापू के नाम से भी याद किया जाता है। उन्हें सरकारी तौर पर राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया है 2 अक्टूबर को उनके जन्म दिन राष्ट्रीय पर्व गांधी जयंती के नाम से मनाया जाता है और दुनियाभर में इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। सबसे पहले गांधी ने रोजगार अहिंसक सविनय अवज्ञा प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका, में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु प्रयुक्त किया। 1915 में उनकी वापसी के बाद उन्होंने भारत में किसानों , कृषि मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्याधिक भूमि कर और भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए एकजुट किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद गांधी जी ने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण, आत्म-निर्भरता के लिए अस्पृश्यता का अंत आदि के लिए बहुत से आंदोलन चलाए। किंतु इन सबसे अधिक विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाले स्वराज की प्राप्ति उनका प्रमुख लक्ष्य था। गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर के विरोध में 1930 में दांडी मार्च और इसके बाद 1942 में , ब्रिटिश भारत छोड़ो आन्दोलन छेड़कर भारतीयों का नेतृत्व कर प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिए वकालत भी की। उन्होंने आत्म-निर्भरता वाले आवासीय समुदाय में अपना जीवन गुजारा किया और परंपरागत भारतीय पोशाक धाँती और सूत से बनी शॉल पहनी जिसे उसने स्वयं ने चरखे पर सूत कात कर हाथ से बनाया था। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि तथा सामाजिक प्रतिकार दोनों के लिए लंबे-लंबे उद्वास भी किए।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में (1895)

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इंकार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक युरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई हेटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गई और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनी तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुई। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

1906 के जुलु युद्ध में भूमिका

1906 में, दक्षिण अफ्रीका में नए चुनाव कर के लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जुलू के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से परित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जाना पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। तथापि, अंग्रेजों ने अपनी सेना में भारतीयों को पद देने से इंकार कर दिया था। इसके बावजूद उन्होंने गांधी जी के इस प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल अंग्रेज सैनिकों को उपचार के लिए स्टेशन पर लाने के लिए स्वेच्छा पूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस कोर की बागडोर गांधी ने थामी। 21 जुलाई 1906 को गांधी जी ने इंडियन ओपिनिय में लिखा कि 23 भारतीय निवासियों के विरुद्ध चलाए गए आप्रेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों से इंडियन ओपिनियन में अपने कॉलमों के माध्यम से इस युद्ध में शामिल होने के लिए आग्रह किया और कहा, यदि सरकार केवल यही महसूस करती है कि आरक्षित बल बेकार हो रहे हैं तब वे इसका उपयोग करेंगे और असली लड़ाई के लिए भारतीयों का प्रशिक्षण देकर इसका अवसर देंगे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष

1915 में, गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आए।इन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन वे भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले जो एक सम्मानित नेता थे पर ही आधारित थे।
चंपारण और खेड़ा – गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन और खेड़ा सत्याग्रह, आंदोलन में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भता दिया गया जिससे वे अत्याधिक गरीबी से थिर गए। गांवों को बूरी तरह गदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पदों से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिन्का बोझ दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वेच्छक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुयायकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत रकूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।

असहयोग आन्दोलन – गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फौजों द्वारा भारतीयों पर जलियावाला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारालक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दगों की भर्तसना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार और भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दी ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

स्वराज और नमक सत्याग्रह – गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता , शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले 1928 में लौटे एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन सैन्डहम के नेतृत्व में एक नया सर्वेधानिक सुधार आयोग बनाया जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसंबर 1928 में गांधी जी ने कलकता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा

गांधी का पुनर्जन्म ही नहीं, गांधी- दृष्टि का पुनर्जागरण हो

(लेखक – ललित गर्ग)

गांधी जयंती – 2 अक्टूबर, 2026 पर विशेष)

महात्मा गांधी को याद करना केवल अतीत के एक महान व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि देना नहीं है, बल्कि अपने वर्तमान की दिशा और भविष्य की दशा पर विचार करना भी है। गांधी किसी एक कालखंड, राजनीतिक ढरूप में नहीं, वे बापू एवं राष्ट्रपिता के रूप में लोकप्रिय हुए, वे एक रचनात्मक व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने ही मूल्यों के बल पर देश को आजादी दिलाई, नैतिक एवं स्वस्थ मूल्यों को स्थापित किया। उनके द्वारा निरूपित सिद्धान्त आज की दुनिया की चुनौतियों एवं समस्याओं के समाधान के सबसे सशक्त माध्यम है। लेकिन वक्त की विडम्बना देखिये कि गांधी को हम बार-बार कटघरे में खड़ा करते हैं और उनकी छवि को धुंधलाने की कोशिश में कोई कमी नहीं छोड़ते। जो मानसिकता गोली मार सकती है, वह गोली दे तो क्या आश्चर्य? पर महात्मा गांधी भारत के अकेले ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें कोई गोली या गाली नहीं मार सकती।

आज भारत ‘नए भारत’ और ‘विकसित भारत’ के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इस यात्रा में गांधी को नए संदर्भ में देखने की जरूरत है। गांधी का स्वदेशी केवल चरखे तक सीमित नहीं था; उसका मूल भाव आत्मनिर्भरता था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30 जनवरी 2026 को गांधीजी की पुण्यतिथि पर भी स्वदेशी को विकसित और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प का आधारस्तंभ बताते हुए उनके कर्तव्य-बोध को स्मरण किया। आज जब भारत स्थानीय उत्पादन, आत्मनिर्भरता, नवाचार, डिजिटल क्षमता और उद्यमिता को आगे बढ़ाने की बात करता है, तब गांधी का स्वावलंबन एक नए आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में दिखाई देता है। गांधी के लिए पिछले का अर्थ केवल उत्पादन और संपन्नता बढ़ाना नहीं था। विकास का अंतिम लक्ष्य मनुष्य था। उनकी दृष्टि में सबसे कमजोर

व्यक्ति की चिंता विकास की कसौटी थी। आज ‘सबका साथ, सबका विकास’ और अंतिम व्यक्ति तक सुविधाओं तथा अवसरों की पहुंच की चर्चा इसी व्यापक मानवीय विकास के संदर्भ में की जा सकती है। गांधी का ‘अंत्योदय’ किसी सरकारी योजना का नाम नहीं, बल्कि विकास की नैतिक कसौटी है-जिसके केंद्र में वह व्यक्ति हो जो सबसे पीछे है।

गांधी की सबसे बड़ी शक्ति यह थी कि उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं माना। उनके लिए राजनीति का नैतिक आधार सेवा था। आज लोकतंत्र को केवल चुनावों और संस्थाओं तक सीमित न रखकर संवाद, सहभागिता, उत्तरदायित्व और जनविश्वास से जोड़ने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की लोकतांत्रिक परंपरा, संवाद और सहभागिता की विरासत को रेखांकित किया है। 2023 के जी-20 सम्मेलन में उन्होंने भारत की प्राचीन सभा-परंपराओं और सामूहिक निर्णय की ऐतिहासिक परंपरा का उल्लेख किया था। यह दृष्टि गांधी की उस राजनीति से संवाद करती है जिसमें जनता केवल शासन की प्रजा नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण की सहभागी थी। भारत की विदेश नीति और वैश्विक भूमिका में भी गांधी-दृष्टि के नए संकेत दिखाई देते हैं। 2023 में भारत की जी-20 अध्यक्षता का सूत्र था- ‘एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य’। प्रधानमंत्री ने इसे भारतीय सभ्यता के ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ के भाव से जोड़ा और विश्व की समस्याओं के समाधान के लिए सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। नई दिल्ली में जी-20 नेताओं का राजघाट जाकर गांधी को श्रद्धांजलि देना भी प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण था। उस अवसर पर गांधी के शांति, सेवा, करुणा और अहिंसा के आदर्शों को सामंजस्यपूर्ण और समावेशी वैश्विक भविष्य से जोड़ा गया।

सचमुच आज विश्व को गाँधीजी के जीवन-मूल्यों की ज्यादा आवश्यकता है । आज धार्मिक कट्टरता बढ़ रही है। कुछ लोग जैहाद के नाम पर घृणित कृत्यों को अंजाम दे रहे हैं। कहीं दंगे हो रहे हैं तो कहीं महिलाओं और बच्चों के साथ अत्याचार की घटनाएँ हो रही हैं। धर्म और संप्रदाय के नाम पर समाज में विष घोला जा रहा है। दुनिया में शस्त्रों की होड़ चल रही है। आतंकवाद जीवन का अनिवार्य सत्य बन गया है। ऐसे में गाँधी बहुत याद आते हैं। इनके विचारों को फैलाकर ही दुनिया में शांति लाई जा सकती है। यहां गांधी की प्रासंगिकता एक और बड़े आयाम में सामने आती है। दुनिया आज युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, आर्थिक असमानता,

जलवायु संकट और अविश्वास की चुनौतियों से गुजर रही है। तकनीक ने मानव की शक्ति बढ़ाई है, लेकिन क्या उसने मानवता बढ़ाई है-यह बड़ा प्रश्न है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लेकर परमाणु हथियारों तक, मनुष्य ने अभूतपूर्व शक्ति हासिल की है; लेकिन शक्ति के साथ संयम, करुणा और नैतिकता न हो तो वही शक्ति विनाश का कारण बन सकती है। गांधी का संदेश इसलिए आज और महत्वपूर्ण है कि उन्होंने साधन और साध्य की पवित्रता को एक-दूसरे से अलग नहीं किया। गांधी को किसी एक राजनीतिक खेमे में बांधना उनके विराट व्यक्तित्व को छोटा करना है। गांधी को केवल कांग्रेस, केवल स्वतंत्रता आंदोलन, केवल खादी या केवल किसी एक राजनीतिक व्याख्या तक सीमित करना उनके वैश्विक स्वरूप के साथ न्याय नहीं है। गांधी भारत की आत्मा से निकले और मानवता की चेतना का हिस्सा बने। वे सीमाओं से आबद्ध नहीं हैं। वे अतीत के हैं, लेकिन केवल अतीत के नहीं हैं। वे आज के हैं और आने वाले हर कल के लिए उपयोगी हैं।

भारत जब विश्व में अपनी भूमिका का विस्तार कर रहा है, तब गांधी-दर्शन उसके लिए एक नैतिक पूंजी बन सकता है। आर्थिक शक्ति भारत को प्रभावशाली बना सकती है, तकनीकी शक्ति उसे सक्षम बना सकती है और सामरिक शक्ति उसे सुरक्षित कर सकती है; लेकिन नैतिक शक्ति ही भारत को विश्वसनीय बना सकती है। विश्वगुरु होने का अर्थ दुनिया पर प्रभुत्व स्थापित करना नहीं, बल्कि दुनिया के सामने ऐसा जीवन-मूल्य प्रस्तुत करना है जिससे मानवता लाभान्वित हो। गांधी इसी नैतिक नेतृत्व की सबसे बड़ी भारतीय संभावनाओं में से एक हैं। प्रधानमंत्री द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं, लोकतांत्रिक मूल्यों और ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ को प्रस्तुत करना इसी व्यापक संदर्भ में देखा जा सकता है। नए भारत की वास्तविक उपलब्धि केवल यह नहीं होगी कि भारत कितना बड़ा आर्थिक राष्ट्र बनता है; बड़ी उपलब्धि यह होगी कि उसकी विकास यात्रा कितनी मानवीय, समावेशी, संवेदनशील और टिकाऊ होती है। सड़कें, उद्योग, डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष अभियान, स्टार्टअप और आर्थिक विकास आवश्यक हैं, लेकिन इनके साथ सत्य, नैतिकता, सामाजिक समरसता, स्वच्छता, पर्यावरण-संरक्षण और कमजोर के प्रति संवेदना भी आवश्यक है। यह वह स्थान है जहां गांधी आधुनिक भारत की विकास-यात्रा के साथ खड़े दिखाई देते हैं।

गांधी की प्रासंगिकता का सबसे बड़ा प्रमाण शायद यही है कि



उन्हें समाप्त करने की जितनी कोशिश हुई, वे उतने ही व्यापक होते गए। आज गांधी केवल भारत के नहीं, विश्व के नैतिक विमर्श का हिस्सा हैं। हिंसा से भरी दुनिया में अहिंसा, विभाजन के बीच संवाद, उपभोगवाद के बीच संयम, केंद्रीकरण के बीच विकेंद्रीकरण, निराशा के बीच सत्य और सत्ता-केंद्रित राजनीति के बीच सेवा-ये गांधी के वे सूत्र हैं जिनकी जरूरत भविष्य की सभ्यता को भी रहेगी। इसलिए इस गांधी जयंती पर हमें केवल गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित नहीं करने हैं; हमें यह देखना है कि हमारे जीवन, समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था और विश्व-दृष्टि में गांधी के कितने मूल्य जीवित हैं। गांधी का पुनर्जन्म किसी व्यक्ति के रूप में नहीं हो सकता; गांधी का पुनर्जन्म तभी होगा जब सत्य प्छि से साहस बने, अहिंसा प्छि से शक्ति बने, स्वदेशी प्छि से आत्मविश्वास बने, सेवा प्छि से राजनीति का संस्कार बने और मानवता प्छि से विकास का केंद्र बने। नया भारत यदि विकसित भारत बनना चाहता है और भारत यदि विश्व में नैतिक नेतृत्व की भूमिका निभाना चाहता है, तो उसे आधुनिकता और आध्यात्मिकता, विज्ञान और जिवेक, शांति और शांति, विकास और करुणा का संतुलन साधना होगा। गांधी इस संतुलन के सबसे प्रखर भारतीय प्रतीकों में हैं। गांधी को अतीत की तस्वीर से निकालकर भविष्य की दृष्टि बनाना होगा। यही गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी और यही उस भारत की पहचान होगी जो केवल विकसित नहीं, बल्कि संवेदनशील, शांतिप्रिय, नैतिक और मानवता के कल्याण का मार्गदर्शक भारत बनना चाहता है।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

सुरक्षाबलों में असुरक्षा

जम्मू-कश्मीर स्थित कटुआ में सेंट्रल इंस्टिट्यूट सिक्वोरिट्री फोर्स की इयूटी पर तेनात एक हिंसक साथी द्वारा चार जवानों की हत्या करने की घटना ने सुरक्षा बलों के भीतर छिपे खतरों की डरानी तस्वीर उकेरी है। बताया जाता है कि सीआईएसएफ के एक हेड कंन्स्टेबल ने अपनी सर्विस एफ्के-47 से गोलीबारी करके इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को अंजाम दिया। बताते हैं कि इस वाक्ये में कार्यस्थल पर अपने छोटे बच्चे को लेकर आने से शुरु हुई बहस कालांतर हिंसक टकराव में बदल गयी। विमत में भी मानसिक द्वंद से गुजर रहे सुरक्षा बलों के जवानों के हिंसक प्रतिरोध के मामले सामने आए हैं। ये घटना बताती है कि सुरक्षा कर्मियों से जुड़ी समस्याओं के निपटारे के लिये मजबूत सिस्टम बनाने की सख्त जरूरत है। निस्संदेह, यह घटना केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल में काम करने की स्थितियों पर भी प्रश्न उठाती है। दरअसल, दूर-दराज के इलाकों में तेनात जवानों को लंबी और अनियमित इयूटी, परिवार से जुड़ी मुश्किलों तथा घर से लंबे समय तक दूर रहने जैसी तमाम चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में किसी तनाव से गुजर रहे सुरक्षाकर्मी के व्यवहार व मानसिक स्थिति पर संवेदनशील ढंग से नजर रखने की जरूरत होती है। यह संकट इसलिए भी बड़ा है क्योंकि सुरक्षा कर्मियों का अनिवार्य रूप से हथियार रखना इयूटी का हिस्सा है। जिसके चलते मामूली विवाद के घातक रूप लेने की आशंका लगातार बनी रहती है। इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि हर छोटा-मोटा विवाद हिंसक रूप में बदल ही सकता है। लेकिन ऐसे संकेतों पर समय रहते ध्यान देने की जरूरत होती है ताकि किसी दुखद घटना को टाला जा सके। निस्संदेह, केंद्रीय सशस्त्र सुरक्षा बलों में ऐसे दुखद हादसों को टालने हेतु, जवानों की शिकायतों के समाधान के लिये प्रभावी तंत्र और असरदार निगरानी की जरूरत है। वहीं दूसरी ओर सुरक्षा बलों में हथियारों को लेकर सुरक्षा उपाय और आसानी से उपलब्ध मनोवैज्ञानिक मदद, बचाव की रणनीति का हिस्सा हो सकती है। निस्संदेह, किसी भी सुरक्षाबल में जवानों का अनुशासित होना, अपरिहार्य शर्त है। वहीं सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में ऑपरेशन के लिये जवानों का हरदम शस्त्रों से लैस होना भी लाजिमी है। ऐसे में निगरानी व किसी भी टकराव को टालने के लिये उपायों को लेकर गंभीर पहल होनी चाहिए। कुछ वर्ष पूर्व गुह मंत्रालय की एक टास्क फोर्स ने केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल में कुछ जवानों द्वारा अपने साथियों की हत्या करने के मुद्दा को लेकर की पहचान की थी। जिसमें उल्लेख किया गया है कि कठोर सेवा शर्तें, छुट्टी मिलने में देरी-विशेषकर परिवार में आपात स्थिति के समय, आलोचना, उत्पीडन पर प्रतिक्रिया तथा साथियों के अनुचित व्यवहार के कारण हिंसक प्रतिक्रियाएँ बढ़ी हैं। कटुआ की घटना की जांच में भी यह पता लगाया जाना चाहिए कि क्या इस मामले में निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन किया गया था। यह दुखद है कि कि देश के बुनियादी ढांचे की सुरक्षा का जिम्मा संभालने वाले देश के एक प्रमुख सुरक्षा बल ने अपने चार जवानों को असमय खो दिया है। निस्संदेह, उनकी मौत के लिये जवाबदेही तय होनी चाहिए। लेकिन इसके साथ यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि भविष्य में किसी सशस्त्र बल के भीतर का मनमुटाव कभी इतने घातक परिणामों तक न पहुंच पाये। दरअसल, वक्त बदला है तो रोजगार के अवसर सिमटने के चलते उच्च शिक्षा हासिल युवा इन सुरक्षा बलों में भर्ती हुए हैं। जिंदगी में सुनहरे सपने लिये जब वे इन सुरक्षा बलों में आते हैं तो कठोर अनुशासन व सख्त नियमों के साथ साम्य नहीं बैठा पाते।

(लेखक-रवामी देवेन्द्र ब्रह्मचारी)

(अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस (2 अक्टूबर 2026) पर विशेष:)

आज दुनिया विज्ञान, तकनीक और आर्थिक प्रगति के जिस दौर में पहुंची है, उसी के समानांतर हिंसा, आतंकवाद, युद्ध, तनाव, असहिष्णुता और प्रतिसर्षा की प्रवृत्तियाँ भी बढ़ी हैं। मनुष्य ने प्रकृति पर विजय पाने की कोशिश में स्वयं अपने भीतर अशांति पैदा कर ली है। राष्ट्रों के बीच अविश्वास है, समाजों में वैचारिक टकराव है, परिवारों में तनाव है और व्यक्तिगत जीवन में भी क्रोध, प्रतिशोध एवं प्रतिसर्षा का दबाव बढ़ रहा है। ऐसे समय में अहिंसा केवल एक नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि संतुलित जीवन और शांतिपूर्ण विश्व-व्यवस्था की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस इसी आवश्यकता की वैश्विक स्वीकृति है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2007 में 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया था। प्रस्ताव में अहिंसा की सार्वभौमिक प्रासंगिकता तथा शांति, सहिष्णुता, समझ और अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता को रेखांकित किया गया।

अहिंसा जीवन का सौंदर्य है। यह केवल किसी को शारीरिक चोट न पहुंचाने का नाम नहीं है। अहिंसा मन, वचन और कर्म की निर्मलता है। किसी के प्रति घृणा न रखना, अपमानजनक भाषा से बचना, विचारों में कटुता न पालना और अपने व्यवहार से दूसरों के मन को अनावश्यक पीड़ा न देना भी अहिंसा है। इसलिए अहिंसा संतुलित जीवन का आधार है। जहां हिंसा है वहां भय है, जहां भय है वहां तनाव है और जहां तनाव है वहां सुख एवं शांति का स्थायी निवास संभव नहीं। अहिंसा की

सबसे व्यापक और सूक्ष्म व्याख्या जैन दर्शन में मिलती है। भगवान महावीर ने अहिंसा को जीवन का सर्वोच्च धर्म बनाया। जैन दर्शन में अहिंसा केवल मनुष्य को मनुष्य से बचाने का सिद्धांत नहीं, बल्कि प्रत्येक जीव के अस्तित्व के सम्मान का दर्शन है। यही कारण है कि जैन साधु-साधवियों का जीवन अहिंसा की प्रयोगशाला जैसा दिखाई देता है।

जैन साधु चलते हैं तो अत्यंत सावधानी से कदम रखते हैं। वे अपने आगे के स्थान को कोमल रजोहरण से साफ करते हैं, ताकि सूक्ष्म जीवों को भी अनावश्यक चोट न पहुंचे। श्वेतांबर परंपरा में मुखवस्त्रिका का प्रयोग भी सूक्ष्म जीवों के प्रति सावधानी की इसी भावना से जुड़ा है। जैन मुनियों के आचार में चलने, बोलने, वस्तु उठाने-रखने और भोजन ग्रहण करने तक में सजगता का विशेष महत्व है। यहां अहिंसा का अर्थ केवल बाहरी हिंसा से बचना नहीं, बल्कि सजग होकर जीना है। जैन आचार में रात्रि-भोजन से बचने, भोजन और जल को जीवों की रक्षा की दृष्टि से सावधानीपूर्वक प्रश्न करने जैसी परंपराएं भी इसी सूक्ष्म अहिंसक चेतना से जुड़ी हैं। जैन साधु का जीवन हमें एक बहुत बड़ा संदेश देता है-जिस जीवन में छोटी-से-छोटी हिंसा के प्रति भी संवेदना है, उसमें बड़ी हिंसा के लिए स्थान कैसे हो सकता है? यही अहिंसा का विराट दर्शन है।

भगवान महावीर की अहिंसा की विशेषता यह है कि वह केवल हाथ की हिंसा को नहीं रोकती, बल्कि वाणी और विचार की हिंसा को भी चुनौती देती है। कट्ट शब्द किसी व्यक्ति के शरीर को घायल नहीं करते, लेकिन उसके मन को गहरी चोट पहुंचा सकते हैं। इसलिए अहिंसा का वास्तविक विस्तार तभी होगा जब हम अपनी भाषा को भी करुणामय बनाएं। हमारा व्यवहार ऐसा हो कि हमारे संपर्क में आने वाला व्यक्ति अपने भीतर अपमान, भय या कड़वाहट महसूस न करे। आज सोशल

मीडिया के दौर में यह शिक्षा और भी महत्वपूर्ण है। एक कठोर शब्द, एक अपमानजनक टिप्पणी या एक झूठी सूचना हजारों लोगों के मन में तनाव और घृणा पैदा कर सकती है। इसलिए डिजिटल युग में अहिंसक वाणी और अहिंसक संचार की जरूरत पहले से अधिक है।

यदि भगवान महावीर ने अहिंसा को आध्यात्मिक और जीवन-दर्शन के रूप में अत्यंत सूक्ष्मता प्रदान की, तो महात्मा गांधी ने उसे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का प्रभावी साधन बनाया। गांधी ने सत्य और अहिंसा को स्वतंत्रता संघर्ष के केंद्र में रखा। नमक सत्याग्रह सहित उनके आंदोलनों ने यह दिखाया कि अन्याय का प्रतिरोध हिंसा के बिना भी किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र भी गांधी को अहिंसा के दर्शन और रणनीति के प्रमुख प्रवर्तकों में मानता है और उनके नेतृत्व को विश्वभर के अहिंसक आंदोलनों की प्रेरणा से जोड़ता है। गांधी की अहिंसा कायराता नहीं थी। वह अन्याय के सामने चुप रहने का नाम भी नहीं थी। वह सत्य के साथ खड़े होकर अन्याय का प्रतिरोध करने की शक्ति थी। गांधी के लिए साधन और साध्य का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण था-शांतिपूर्ण समाज की स्थापना हिंसक साधनों से नहीं की जा सकती। संयुक्त राष्ट्र के दस्तावेज भी गांधी के विचारों को इसी संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं कि स्थायी परिवर्तन के लिए अहिंसक साधनों की आवश्यकता है।

आज युद्ध और आतंकवाद ने मानवता के सामने गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। राष्ट्रों के पास विनाश के पहले से अधिक शक्तिशाली साधन हैं। तकनीक ने युद्ध की क्षमता को कई गुना बढ़ा दिया है। ऐसे समय में अहिंसा का अर्थ यह नहीं कि समाज अपनी सुरक्षा और न्याय की जिम्मेदारी छोड़ दे। आतंकवाद और हिंसा का सामना करते हुए राष्ट्रों को नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी ही होती है। लेकिन दीर्घकालीन शांति केवल शक्ति-

संतुलन से नहीं, बल्कि संवाद, विश्वास, न्याय, सह-अस्तित्व और मानवीय संवेदना से निर्मित होती है। भारत की सभ्यता ने सदियों से वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्व भवन्तु सुखिनः, अनेकांत और सर्वधर्म सद्भाव जैसी अवधारणाओं के माध्यम से इसी व्यापक दृष्टि को पोषित किया है। ये विचार हमें बताते हैं कि दूसरों की दृष्टि को समझो बिना स्थायी शांति संभव नहीं। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी शांति और संवाद की ही आवश्यकता को लगातार रेखांकित किया है।

भारत के वर्तमान नेतृत्व ने भी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर शांति, संवाद, सह-अस्तित्व और मानव-केंद्रित विकास जैसे विचारों को सामने रखा है। लेकिन अहिंसा का वैश्विक संदेश केवल सरकारों या राजनेताओं का दायित्व नहीं है। इसकी शुरुआत व्यक्ति से होती है-परिवार से, विद्यालय से, समाज से और हमारी रोजमर्रा की भाषा एवं व्यवहार से। आज मनुष्य को बाहर की हिंसा से जितना खतरा है, उतना ही भीतर की हिंसा से भी है। क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, लोभ और प्रतिशोध मनुष्य के भीतर निरंतर संघर्ष पैदा करते हैं। इसलिए अहिंसा का पहला प्रयोग अपने भीतर होना चाहिए। अपने क्रोध को करुणा में, प्रतिसर्षा को सहयोग में, प्रतिशोध को क्षमा में और असहमति को संवाद में बदलना ही आधुनिक अहिंसा है। परिवार में अहिंसा का अर्थ है-एक-दूसरे को समझना। समाज में अहिंसा का अर्थ है-विविधताओं का सम्मान करना। राजनीति में अहिंसा का अर्थ है-विचारों के संघर्ष को शत्रुता में न बदलना। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अहिंसा का अर्थ है-संवाद और कूटनीति के रास्ते खुले रखना। अहिंसा कमजोरी नहीं, संयमित शक्ति है। हिंसा तत्काल परिणाम दे सकती है, लेकिन स्थायी शांति का निर्माण नहीं कर सकती। संयुक्त राष्ट्र ने भी गांधी के संदर्भ में इस विचार को रेखांकित किया है कि हिंसा पर स्थायी निर्माण संभव नहीं है।

श्रद्धा के मुताबिक पूजा

हरेक व्यक्ति में चाहे वह जैसा भी हो, एक विशेष प्रकार की श्रद्धा पाई जाती है। लेकिन उसके द्वारा अर्जित स्वभाव के अनुसार उनकी श्रद्धा उत्तम (संतोगुणी), राजस (रजोगुणी) अथवा तामसी कहलाती है। अपनी श्रद्धा के अनुसार ही वह कतिपय लोगों से संगति करता है। अब वास्तविक तथ्य तो यह है कि जैसा कि गीता के 15 वें अध्याय में कहा गया है कि प्रत्येक जीव परमेश्वर का अंश है। अतएव वह मूलतः इन समस्त गुणों से परे होता है।

लेकिन जब वह भगवान के साथ अपने सम्बन्ध को भूल जाता है और बद्ध जीवन में भौतिक प्रकृति के संसर्ग में आता है तो वह विभिन्न प्रकार की प्रकृति के साथ संगति करके

अपना स्थान बनाता है। इस प्रकार से प्राप्त कृत्रिम श्रद्धा तथा अस्तित्व मात्र भौतिक होते हैं। भले ही कोई किसी धारणा या देहात्मबोध द्वारा प्रेरित हो लेकिन मूलतः वह निगरुण या दिव्य होता है।

अतएव भगवान के साथ अपना सम्बन्ध फिर से प्राप्त करने के लिए उसे भौतिक कल्मष से शुद्ध होना पड़ता है। यही एकमात्र मार्ग है, निर्भय होकर कृष्णभावनामृत में लौटने है। श्रद्धा मूलतः संतोगुण से उत्पन्न होती है। मनुष्य की श्रद्धा किसी देवता, किसी कृत्रिम ईश्वर या मनोमर्ष में हो सकती है लेकिन प्रबल श्रद्धा सात्त्विक कार्यों से उत्पन्न होती है। किंतु भौतिक बद्धजीवन में कोई भी कार्य शुद्ध नहीं

होता। वे मिश्रित होते हैं। वे शुद्ध सात्त्विक नहीं होते। शुद्ध सत्त्व दिव्य होता है। इसमें रहकर मनुष्य भगवान के स्वभाव को समझ सकता है। जब तक श्रद्धा पूर्णतया सात्त्विक नहीं होती, वह प्रकृति के किसी भी गुण से दूषित हो सकती है। ये दूषित गुण हृदय तक फैल जाते हैं।

अतः किसी विशेष गुण के सम्पर्क में रहकर हृदय जिस स्थिति में होता है, उसी के अनुसार श्रद्धा होती है। यदि किसी का हृदय संतोगुण में स्थित है तो उसकी श्रद्धा भी संतोगुणी है। यदि हृदय रजोगुण में स्थित है तो उसकी श्रद्धा रजोगुणी और तमोगुण में स्थित है तो उसकी श्रद्धा तमोगुणी होती है। पूजा इसीके आधार पर होती है।

शेयर बाजार में निवेशकों के 8 सप्ताह में डूबे 45 लाख करोड़

(लेखक- सनत जैन)

- हर्षद मेहता जैसा घोटाला?

भारतीय शेयर बाजार इन दिनों अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। शेयर बाजार के निवेशकों को 8 सप्ताह के अंदर लगभग 45 लाख करोड़ रुपए का नुकसान उठाना पड़ा है। यह कोई छोटा-मोटा नुकसान नहीं है। दिसंबर 2025 में मुंबई स्टॉक एक्सचेंज का कारोबार 86159 के सूचकांक पर हो रहा था। 1 अक्टूबर 2026 को यह गिरकर 71328 पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह से नेशनल स्टॉक एक्सचेंज जनवरी 2026 के प्रथम सप्ताह में 26373 पर कारोबार कर रहा था। जो अब घटकर 22337 पर आ गया है। शेयर बाजार में लगातार उथल-पुथल मची हुई है। पिछले 8 सप्ताह में जिस तरह से शेयर बाजार में निरास

का दौर शुरू हो गया है। विदेशी निवेशक शेयर बाजार छोड़कर भाग रहे हैं। रिजर्व बैंक और सेबी की जो नई नीतियां बनी है, उसमें कोई पारदर्शिता नहीं है। भारतीय शेयर बाजार को सट्टे बाजार की तरह संचालित किए जाने से निवेशकों का भरोसा अब शेयर बाजार में नहीं रहा। डेही-सही कसर रिजर्व बैंक ने पूरी कर दी है। जब उसने प्रवासी भारतीयों से ऊंची ब्याज दर पर डॉलर में निवेश करने और डॉलर में ही ब्याज देने का प्रावधान किया। उसके बाद से स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही है। आर्थिक विशेषज्ञ यह कहने लगे हैं, 1992 जैसे हालत 2026 में देखने को मिल रहे हैं। 1992 में जब हर्षद मेहता घोटाला सामने आया था। हर्षद मेहता के रंक से राजा और राजा से रंक बनने की कहानी को आसानी से समझा जा सकता है। 1992 में शेयर बाजार में मात्र 4025 रुपये करोड़ रुपए का घोटाला हुआ था। जिसने शेयर बाजार और

भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव को हिला कर रख दिया था। उस समय भी भारतीय वित्तीय संस्थानों और बैंकों को भारी नुकसान हुआ था। यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया जैसी कंपनी पूरी तरह से बैट गई थी। चारों तरफ अफरा तफरी का माहौल बन गया था। उस समय हर्षद मेहता ने एक करोड़ रुपए की रिश्तत तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहराव को देने की प्रेरकश की थी। इस पर बड़ा बवाल मचा था। 1992 के शेयर घोटाले के बाद भारत की अर्थव्यवस्था को संभलने में कई वर्ष लगे। 2014 के बाद से जिस तरह से सेबी और रिजर्व बैंक समय-समय पर जो नियम कानून बना रहे हैं। केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा आर्थिक मामलों में जो नियम लिए जा रहे हैं। उसके बारे में अब कहा जा रहा है, शेयर बाजार और भारतीय कंपनियों के माध्यम से लाखों करोड़ रुपए के घोटाले पिछले 12 वर्षों में हुए हैं। शेयर बाजार से सारा पैसा मुनाफाखोरी और घोटालेबाजी के

कारण से निकलकर विदेशों में निवेश हो गया है। भारत के बैंकों और वित्तीय संस्थाओं ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कंपनियों में भारी निवेश किया है। शेयर बाजार के गिराव से भारी आर्थिक गड़बड़ियां की गई हैं। पिछले दो वर्षों में जिस तरह के हालात शेयर बाजार के बने हुए हैं। उसने शेयर बाजार की आंतरिक स्थिति को और भी खराब कर दिया है। विशेष रूप से ईरान और अमेरिका युद्ध के बाद जिस तरह से कच्चे तेल के दाम बढ़े हैं। डालर के मुकाबले रुपया की कीमत तेजी के साथ कम हुई है। राजकोषीय घाटा बढ़ता ही जा रहा है। आयात और निर्यात के बीच का अंतर भारत की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। पिछले दो सप्ताह में शेयर बाजार से लगभग 45 लाख करोड़ रुपया निवेशकों का नुकसान के रूप में सामने आया है। ऐसी स्थिति में आर्थिक विशेषज्ञों का कहना

है, भारत की अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता के बाद से सबसे खराब दौर में पहुंच गई है। यदि मुंबई स्टॉक एक्सचेंज में 70000 सूचकांक से कम में कारोबार करेगा, ऐसी स्थिति में बाजार को संभाल पाना बहुत मुश्किल होगा। भारत के कई बैंक भारतीय जीवन बीमा और अन्य वित्तीय संस्थाएं भारी संकट के दौर में आ सकती हैं। आर्थिक विशेषज्ञ यहां तक आशंका व्यक्त करने लगे हैं, 2008 में जिस तरह से लेहमन ब्रदर्स के कारण अमेरिका में आर्थिक मंदी आई थी। संकटों बैंक दिवालिया हो गए थे, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह की अफरा तफरी मची थी। इस तरह के हालात भारत में भी दिखने लगे हैं। पिछले एक दशक में भारत के कारोबारियों ने बैंकों और राजनेताओं से मिलकर जिस तरह से लाखों करोड़ रुपयों के घोटाले शेयर बाजा और बैंकों के जरिए किए हैं। अब वह घोटाले एक-एक करके खुलने लगे हैं। जिसके कारण

भारतीय शेयर बाजार को लेकर अब दुनिया भर के निवेशक यहां से अपनी रकम निकाल कर भाग रहे हैं। देशी निवेशकों को पिछले 2 साल से शेयर बाजार से रिटर्न नहीं मिल रहा है, उल्टा नुकसान होने लगा है। ऐसी स्थिति में भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर अब यह कहा जाने लगा है, लोग नहीं समझ पा रहे हैं, कि उन्हें कहां निवेश करना चाहिए। बैंक भी सुरक्षित नहीं है। सोने, चांदी की कीमतों में भी अस्थिरता मची हुई है। आर्थिक मंदी की संभावनाओं को देखते हुए भारतीय निवेशक को यह समझ नहीं आ रहा है, वह अपना निवेश करें, तो कहां करें? सरकार ने तरह-तरह के नियम कानून बनाकर लोगों को जो निवेश के संवंध में आर्थिक आजादी थी, उसे भी कई तरीके से बाधित कर दिया है। सरकार ने पिछले एक दशक में टैक्स और शुल्क बड़ी मात्रा में लगाये है। लोगों को कर्ज लेकर खर्च चलाना पड़ रहा है। एवपीए बढ़ता ही जा रहा है।

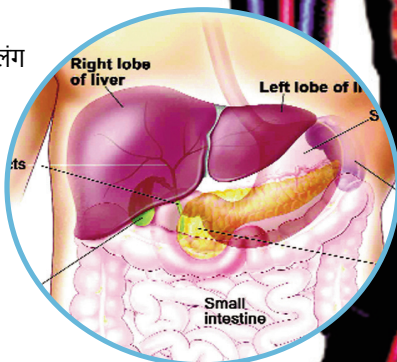
लीवर कैंसर, लीवर में असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि है। लीवर ऐसे तत्व उत्पन्न करता है जो रक्त का थक्का जमने में मदद करते हैं। विषैले तत्वों, दवाओं और अल्कोहल आदि को हटाता है। पित्त निर्मित करता है, जिससे शरीर को वसा और कोलेस्ट्रॉल अवशोषण में सहायता मिलती है।

पुरुषों को बीमारी अधिक

यह संयुक्त राज्य और यूरोप में अपेक्षाकृत कम पाया जाता है। अमेरिकन कैंसर सोसायटी के अनुमान के अनुसार, हर वर्ष 17,000 से अधिक लोगों में प्राइमरी लीवर कैंसर का निदान पाया जाता है। इनमें से अधिकतर की उम्र 40 वर्ष से अधिक होती है और 15,000 से ज्यादा लोगों की इस बीमारी से मृत्यु हो जाती है। संयुक्त राज्य में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में लीवर कैंसर के दोगुना मामले पाए जाते हैं।

कोशिकाएं फैलती हैं

संयुक्त राज्य में अधिकतर लीवर ट्यूमर, लीवर में अन्य अंगों मुख्य रूप से कोलोन, रेक्टम, लंग, ब्रेस्ट, पैंक्रिया और स्टैम से फैलते हैं। जब कोई कैंसर लीवर में अन्य कहीं से फैलता है तो कैंसर कोशिकाएं दोनों जगहों पर समान होती हैं। उदाहरण के लिए यदि फेफड़ों का कैंसर (लंग कैंसर) लीवर तक फैलता है तो लीवर में पाई जाने वाली कैंसर युक्त कोशिकाएं फेफड़ों में पाई गई कैंसरयुक्त कोशिकाओं के समान ही होती हैं। इस कारण व्यक्ति का उपचार लीवर कैंसर के लिए नहीं, बल्कि लंग कैंसर के लिए किया जाता है। लीवर कैंसर को डॉक्टरन मेटॉस्टेटिक लंग कैंसर कह सकते हैं।



जोखिम घटक

हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा के ज्यादातर मामलों में हेपेटाइटिस बी और हेपेटाइटिस-सी जिम्मेदार होते हैं। हेपेटाइटिस-ए में लीवर कैंसर पनपने का खतरा नहीं बढ़ता। सिर्रोसिस, जिसमें लीवर की कोशिकाओं पर अनेक कारणों से दाग बन जाते हैं। संयुक्त राज्य में सिर्रोसिस का सबसे प्रचलित कारण हेपेटाइटिस-सी और अधिक मात्रा में शराब पीना है। संयुक्त राज्य में 50 से 70 प्रतिशत लीवर कैंसर के मामले सिर्रोसिस से जुड़े होते हैं। कुछ अध्ययनों में इसका संबंध हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा से पाया गया है।

इनसे बढ़ता है खतरा

इस प्रकार का कैंसर पनपने का खतरा बढ़ा देती हैं जिनमें शामिल हैं – पित्ताशय की पथरी (गॉलस्टोपन्सक), पित्ताशय दाह (गॉलब्लडेर इन्फ्लेमेशन) और कई बार क्रॉनिक अल्स रेटिव कोलाइटिस (लार्ज बावेल में इन्फ्लेमेशन होना)। एंजियोसरकोमा (हेमन्जियोसरकोमा) – यह लीवर कैंसर का बहुत कम पाया जाने वाला प्रकार है। हेपेटोब्लॉस्टोनमा – यह दुर्लभ प्रकार का कैंसर, आमतौर से 4 वर्ष की उम्र से छोटे बच्चों में पाया जाता है।

लीवर कैंसर के लक्षण

- बीमारी बढ़ जाने तक इसके लक्षण आमतौर से नहीं दिखते। लक्षणों में ये शामिल किए जा सकते हैं–
- वजन में अप्रत्याशित कमी आ जाना।
- टीक से भूख न लगना।
- थोड़ा खाना खाने पर भी पेट भरा हुआ लगना।
- पेट के ऊपर या दाएं हिस्से में दर्द या सूजन का होना।
- त्वचा और आंखों पर पीलापन होना।
- लीवर का फैल जाना या लीवर के क्षेत्र में किसी पिंड का बनना।
- क्रॉनिक हेपेटाइटिस या सिर्रोसिस की समस्या गंभीर हो जाना।
- रक्त में शर्करा (ब्लड शुगर) कम होना।
- पुरुषों में स्तन वृद्धि होना।

लीवर कैंसर का निदान

लीवर कैंसर का पता तब लगता है, जब बीमारी का स्तर बढ़ जाता है। प्रारंभिक अवस्था में इसके लक्षण एकदम स्पष्ट नजर नहीं आते। डॉक्टर आपसे निम्न जांचें करा सकता है।

शारीरिक जांचें

वजन में कमी होने, कुपोषण, कमजोरी, लीवर का बढ़ना और इससे जुड़ी बीमारियां जैसे कि हेपेटाइटिस और सिर्रोसिस।

ब्लड टेस्ट

अल्फा-फेटोप्रोटीन नामक एक प्रोटीन के बढ़े हुए स्तर की जांच जिससे लीवर कैंसर का पता लग सकता है। कैंस्यूटर का टेड टोमोग्राफी (सीटी) स्कैन, एक प्रक्रिया ट्यूमर की खोज और लोकेशन जानने के लिए जिसमें एक्स-रे और

कंप्यूटर तकनीक का प्रयोग शरीर की अनुप्रस्थ (कॉस सेक्शन) छवियां निर्मित करने के लिए किया जाता है।

अल्ट्रा साउंड से जांचें

इसका उपयोग लीवर कैंसर की खोज और कैंसर युक्त (मैलिगनेंट) तथा कैंसर रहित (सामान्य) ट्यूमरों में अंतर के लिए किया जाता है।

लीवर कैंसर की चिकित्सा

उपचार कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे कैंसर का स्तर, आपकी उम्र और आपका सामान्य स्वास्थ्य। सर्जरी, रेडिएशन थेरेपी और कीमोथेरेपी प्रमुख उपचार विकल्प हैं। प्रायः इन तीनों को एक साथ मिलाकर उपयोग किया जाता है। सामान्यतः कोई अकेला ट्यूमर कैंसर जो लिम्फ नोड्स या दूसरे अंगों तक फैला नहीं हो, उसे सर्जरी से निकाला जा सकता है। हालांकि इस शुरुआती अवस्था में कम ही लीवर कैंसरों का पता लग पाता है। कुछ मामलों में, यकृत प्रत्यारोपण पर विचार किया जा सकता है। इसमें ट्यूमर्स की समस्या भी होती है। इसके अलावा कई तकलीफें साथ में बढ़ती जाती हैं।

डॉक्टर से कब संपर्क करें

यदि आपमें लीवर कैंसर का कोई भी लक्षण है तो अपने डॉक्टर से संपर्क करें। मुख्य लक्षण ये हैं– थकान, हल्का बुखार, त्वचा और आंखों का पीलापन (जांडिस), मांसपेशियों या जोड़ों का दर्द, मतली आना, मूत्र का गाढ़ा रंग, उल्टी होना, भूख न लगना और पेट में दर्द या सूजन आने पर आप डॉक्टर से परामर्श लेकर चिकित्सा करा सकते हैं।

उम्र बढ़ना एक एक प्राकृतिक और अपरिहार्य प्रक्रिया है, जिसे इंसान को हर हाल में स्वीकार करना होता है। उम्र बढ़ने के साथ ही आपके संपूर्ण स्वास्थ्य और जीवन में बहुत से बदलाव आते हैं, जिसे स्वीकार कर उसके अनुकूल अपने आप को ढालना पड़ता है।



बुढ़ापे की समस्याएं

शरीर में होने वाले बदलावों में विशेष तौर पर सेक्स क्षमता में कमी और मांस-पेशियों में बदलाव आता है। इसलिए आपको इसे स्वीकार कर इस परिवर्तन के साथ ही जीना पड़ेगा।

साध लेते हैं चुप्पी

अक्सर आदमी स्वास्थ्य संबंधी चर्चा होने पर चुप्पी साध लेता है। भावनाओं को दबाने से उसके दिमाग में एक तरह का भावनात्मक हलचल होता है और इससे तनाव, निराशा और चिंता में वृद्धि होती है। अपने घरेलू व अन्य समस्याओं का हल ढूढ़ने और उस पर सलाह-मशविरा करने के लिए अपने खास लोगों के साथ उसे शेयर करना चाहिए। अपनी भावनाओं को इस तरह दूसरे लोगों के साथ शेयर करने से व्यक्ति अपनी बढ़ती आयु से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से छुटकारा पा जाता है।

सकारात्मक सोचें

जीवन के प्रति हमेशा सकारात्मक सोच रखें और जीवन के मध्य अवस्था का सामना करने के लिए मानसिक तौर पर पहले से ही तैयारी कर लें। उम्र बढ़ने के साथ स्वास्थ्य में कई तरह का परिवर्तन होता है और इससे व्यक्ति के सेक्सुअल प्रदर्शन पर भी असर दिखने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने आप को असक्षम और अयोग्य समझने लगता है और एक तरह से हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है। व्यक्ति में आत्मसम्मान में कमी, तनाव और निराशा जैसी बहुत सी बीमारियां मनोवैज्ञानिक समस्याओं के कारण पैदा होती हैं, जो आदमी के सेक्सुअल स्वास्थ्य को प्रभावित करने के साथ ही, उसके संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं।

शेयर करें समस्याएं

व्यक्ति को चाहिए की अपनी पत्नी के साथ अपनी समस्याओं को शेयर करें। संभव है कि वह उन समस्याओं का हल ढूढ़ने के लिए कोई उपाय बताए और इससे तनाव और निराशा की स्थिति से निकलने में मदद मिले।

भरपूर लें आहार

हमेशा पोषक तत्वों से भरपूर आहार लें और नियमित रूप से भोजन करें। प्रोसेस्ड और फैटी भोजन करने से परहेज करें और इसके बदले में प्रचुर मात्रा में ताजे फल और फाइबर युक्त आहार का सेवन करें।

एक्सरसाइज जरूरी

हर आयु में नियमित रूप से एक्सरसाइज करना जरूरी होता है, लेकिन जरूरत से ज्यादा एक्सरसाइज कर अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं कर हल्का-फुल्का एक्सरसाइज करना चाहिए। इससे शरीर के साथ दिमाग पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

ये भी रखें ध्यान

अपने वजन को हमेशा नियंत्रण में रखें। मोटापा एक साथ कई बीमारियों को निम्नत्रण देता है। भोजन में पोषक तत्वों की कमी और कुपोषण से बचने के लिए मल्टीविटामिन्स और सप्लीमेंट लें। शरीर में किसी भी तरह का असहजता महसूस होने पर तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें। जीवन में काम-काजी बने, कुछ न कुछ शारीरिक श्रम अवश्य करते रहें।

युवाओं के दिल पर अटैक!



एक नए शोध से पता चलता है कि डिवाइड कंट्रीज में जिस उम्र में हार्ट अटैक होता है, हमारे देश के लोग उसके 10 से 15 साल पहले इसके शिकार हो जाते हैं। गौरतलब है कि डिवाइड कंट्रीज में 70 परसेंट हार्ट अटैक जहां 70 की उम्र के बाद होते हैं, वहीं हमारे देश में दो-तिहाई हार्ट अटैक 60 से कम उम्र वालों को होते हैं। हाल ही में आई एक स्टडी के मुताबिक, अब 30-40 की एज ग्रुप वालों का दिल भी सेफ नहीं है। मेडिकल साइंस की भाषा में यह एक्सट्रीमीली प्रिमेच्योर स्ट्रेज है।

दिल चाहता है नींद

हार्ट प्रॉब्लम की एक बड़ी वजह यंग इंडिया में नींद में कमी भी है। यंग प्रोफेशनल्स अक्सर अपनी नींद पूरी नहीं करते। अगर वे सोते भी हैं, तो उनका दिमाग अगले दिन के लिए चलता रहता है। दिनभर जो कुछ हुआ, वे उसे सोचते हैं और फिर दिमाग में अगले दिन की प्लानिंग चलती रहती है। इन सबके बीच कंफर्टबल नींद का तो

खात्मा ही हो जाता है। अच्छी नींद जरूरी है, आधी-अधूरी नहीं। जैसे कि रात को भी फोन बज रहा है, एसएमएस पढ़ रहे हैं। नींद की कमी से स्ट्रेमिना खत्म होने लगता है और धड़कन तेज होने लगती है। बिजी लाइफस्टाइल की वजह से यूथ एक्सरसाइज भी नहीं कर पाते। इससे ब्लड प्रेशर भी बढ़ता है। खासकर कॉल सेंटर जैसी नाइट शिफ्ट जॉब करने वालों की हालत तो और भी ज्यादा खराब है। वैसे तो उनके पास सोने के लिए दिन होता है, लेकिन तब वे दूसरे कामों में लगे रहते हैं और बस 2-4 घंटे की ही नींद लेते हैं। बकौल डॉ. चानना, हार्ट के लिए अच्छी नींद बेहद जरूरी है। यही वजह है कि आजकल 25, 28 और 32 साल की उम्र में हार्ट अटैक हो रहे हैं। नींद के लिए टाइम तो निकालना ही पड़ता है। लेकिन जब तक मेंटली फ्री नहीं होंगे, तब तक अच्छी नींद कैसे आएगी? रिसर्च बताती है कि 6 घंटे से कम सोने वालों को हार्ट अटैक होने की आशंका ज्यादा रहती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि नींद पूरी लेनी चाहिए।

मस्ती से आठ घंटे सोएं

एक्सपर्ट्स का मानना है कि 6 घंटे की नींद बेहद जरूरी है, लेकिन अगर आप चाहते हैं कि नेक्स्ट डे का काम फ्रेश होकर करें, तो 8 घंटे मस्ती से सोएं। लेकिन इसमें मेडिकेशन का स्कोप कम है और लाइफ स्टाइल इंप्रूवमेंट का रोल ज्यादा है। आपकी डाइट और मेंटल बैलेंस सब मिलकर ही अच्छी नींद देगे। अगर आप रात को 11 बजे ओवरड्रिटिंग करते हैं, तो आपको अच्छी नींद कहां से आएगी। गौरतलब है कि जो लोग ज्यादा सोते हैं, उनका दिल भी अच्छी हालत में नहीं रहता। लेकिन यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि ज्यादा देर तक सोना अक्सर

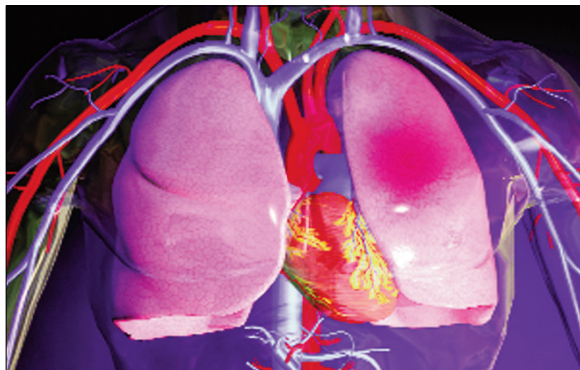


फ्रैगमेंटेड स्लीप होता है। नींद पूरी न होने के कारण ही लोग देर तक सोते रहते हैं। इसलिए स्लीप क्वालिटी मेंटन करने पर ध्यान देना चाहिए। इसके अलावा स्नोरिंग पर भी नजर रखने की जरूरत है। जो लोग ज्यादा खरोंटे लेते हैं, उन्हें अपनी स्लीप स्टडी करानी चाहिए।

सिमटे रहने से दिल सेफ नहीं

एक ओपन हार्ट सर्जरी इंस्टीट्यूट के बाहर लिखा था, दिल खोल लेते अपना अगर यारों के साथ, तो आज न खोलना पड़ता औजारों के साथ ...। जो हां, अपने आप में सिमटे रहने से भी दिल सेफ नहीं रहता। क्योंकि इससे स्ट्रेस मैनेज नहीं हो पाता। इन दिनों 28 से लेकर 40 तक उम्र वाले हार्ट पेशेंट ज्यादा हैं। इसका मेन रीजन यह माना जाता है कि हमारा जेनेटिक मेकअप ही ऐसा है। लेकिन यहां सवाल यह भी उठता है कि अगर जेनेटिक रीजन है, तो पहले यह प्रॉब्लम क्यों नहीं थी? दरअसल, पहले, दूसरे फैक्टर्स कंट्रोल में थे। डाइट और स्ट्रेस में ऐसा असंतुलन नहीं था। अब वेजिटेबल इन्टेक कम हो गया है। सिर्फ मेट्रो में ही नहीं, बल्कि छोटे शहरों में भी फिजिकल एक्टिविटीज कम होती जा रही है। ऐसे में

जवानी में तमाम लोगों के दिलों पर अटैक होता है, लेकिन आजकल के युवा हार्ट अटैक के भी शिकार हो रहे हैं। एक नई स्टडी में पता लगा है कि कम उम्र में इसके सबसे ज्यादा शिकार भारतीय युवा ही हैं।



यंगस्टर्स के लिए जरूरी है कि वे स्मोकिंग पर चेक रखें। रेग्युलर ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल चेक कराएं। हर हाल में मेंटल स्ट्रेस कम करें। गुप्स में मिलना और आपस में चीजों को शेयर करना जरूरी है। वर्कप्लेस में भी ग्रुप में घुले-मिलें।

हार्ट अटैक की दो अवस्थाएं

यंग हार्ट अटैक की दो कैटेगिरीज हैं। एक वह जिनके पैरेंट्स को भी यंग एज में हार्ट अटैक की प्रॉब्लम हुई थी। दूसरे वे जो अपनी बिगडी हुई लाइफस्टाइल के चलते इसकी चपेट में आए। वजह चाहे जो भी हो, यूथ को अपने हार्ट की हेल्थ के लिए पहले से ही एक्टिव हो जाना चाहिए। अगर हेरिटेडि प्रॉब्लम है, तो 40 की उम्र होते ही रेग्युलर हेल्थ चेकअप कराना चाहिए। ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल लेवल का चेकअप बेहद जरूरी है। इन सबके अलावा यूथ में हार्ट अटैक के लिए स्मोकिंग भी जिम्मेदार है। रॉन्ग डाइट हैबिट्स भी दिल को बीमार कर सकता है।

जंक फूड में ट्रांस फैटी एसिड

जंक फूड में ट्रांस फैटी एसिड होते हैं, जो हार्ट के लिए नुकसानदायक होते हैं। पिज्जा और बर्गर जैसे फूड की बजाय फ्रेश ग्रीन वेजिटेबल्स और कलरफुल फ्रूट्स खाना बेहतर रहेगा। दिनभर में कम से कम 5 बार कलरफुल फ्रूट्स और सलाद लें। दरअसल, इनमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स बैड कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कम करते हैं। इसके

रिस्क फैक्टर

- » ओबेसिटी
- » स्लीप डिऑर्डर
- » डायबिटीज
- » एक्सरसाइज में कमी
- » हाई कोलेस्ट्रॉल
- » स्मोकिंग
- » स्ट्रेस

यह भी करें

- » हार्ट एक मसल है, इसलिए प्रोटीन रिच डाइट लें।
- » स्ट्रेंथ बिल्डिंग एक्सरसाइज भी जरूरी है।
- » हार्ट-स्पेसिफिक न्यूट्रिएंट्स लें।
- » गुप्स में घुले-मिलें। इससे स्ट्रेस कम होता है।

अलावा ऑल्संभंड और वॉलनट जैसे हेल्दी नट्स की 40-50 ग्राम क्वांटिटी हर रोज लेना चाहिए। दूसरे हर समय मोबाइल और कंप्यूटर से जुड़े रहने की वजह से यूथ की फिजिकल एक्टिविटी बहुत कम हो गई है। ऐसे में हफ्ते में पांच दिन 3-4 मील पैदल चलना फायदेमंद रहेगा। हर रोज 30-40 मिनट की ब्रिस्क वॉकिंग या वर्कआउट भी रूटीन में शामिल होना चाहिए।



नीदरलैंड में 24 महीने के बच्चे को इच्छामृत्यु

एम्स्टर्डम, एजेंसी। नीदरलैंड में पहली बार 24 महीने के बच्चे को इच्छामृत्यु दी गई। साल 2024 में लागू हुए इच्छामृत्यु के नए नियम के बाद यह पहला मामला है। रिपोर्ट के मुताबिक, स्वास्थ्य मंत्री सोफी हरमन्स ने जून में बताया था कि 2025 के अंत में गंभीर बीमारी से पीड़ित एक बच्चे की इच्छामृत्यु दी गई थी। अब एक समीक्षा समिति की रिपोर्ट में इस मामले की विस्तृत जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक, बच्चे का जन्म 26 सप्ताह व तीन दिन की गर्भावस्था में हुआ था। समय से पहले जन्म के कारण उसे मस्तिष्क को गंभीर नुकसान पहुंचा और कई संक्रमण हुए। चार महीने की उम्र में उसे सेप्सिस हुआ। आठ की उम्र में इन्फैंटाइल एपिलेप्टिक स्प्याजम सिंड्रोम का पता चला।

रुस में ट्रायल सफल, भारत के स्वदेशी कावेरी इंजन से उड़णा घातक स्टेल्थ ड्रोन

मास्को, एजेंसी। भारत के स्वदेशी कावेरी ड्राई इंजन ने रूस में अपने ज्यादा ऊंचाई और उड़ान के परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के गैस टर्बाइन रिसर्च एस्टेब्लिशमेंट (जीटीआरई) की ओर से विकसित यह इंजन भारत के आगामी स्टेल्थ मानवरहित लड़ाकू विमान घातक में लगाया जाएगा। परीक्षणों के दौरान इस इंजन ने 48.5 किलोन्यूटन (केएन) का उच्च ड्राई थ्रस्ट हासिल किया, जो इसके निर्धारित 46 केएन के लक्ष्य से काफी अधिक है। ये परीक्षण अत्यधिक ऊंचाई व कम दबाव जैसी परिस्थितियों में और मॉडिफाइड इल्यूशिन् डिूव-76 विमान पर इंजन को माउंट करके किए गए। रूस में परीक्षण पूरे होने के बाद अब यह परियोजना भारत में सॉर्टिफिकेशन और इंटीग्रेशन के चरण में पहुंच गई है। यह सफलता भारत के घरेलू जेट इंजन निर्माण की दिशा में एक अहम कदम है।

रुस में उड़ान भरते ही गिरा सेना का बमवर्षक विमान, छह की मौत

मास्को, एजेंसी। रूस के सुदूर पूर्वी अमूर क्षेत्र में मंगलवार को एक बड़ा विमान हादसा हो गया। यहां एक नियमित ट्रेनिंग उड़ान के दौरान रूसी सेना का परमाणु क्षमता वाला बड़ा बमवर्षक विमान उड़ान भरने के कुछ ही मिनटों बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया। रूसी रक्षा मंत्रालय के अनुसार, परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम रूस का टीयू-95एमएस बमवर्षक विमान एक प्रशिक्षण उड़ान के दौरान टेक-ऑफ करने के कुछ ही मिनटों बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें क्रू के सात सदस्यों में से छह की मौत हो गई, जबकि एक सदस्य सुरक्षित बच गया है जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शुरुआती सैन्य रिपोर्ट्स और स्थानीय मीडिया के अनुसार, उड़ान भरने के तुरंत बाद विमान के इंजनों में आग लग गई या पयूल टैंक में विस्फोट हो गया, जिसके चलते विमान सीधे जमीन पर आ गिरा और आग के गोले में तब्दील हो गया। मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह विमान नियमित सैन्य अभ्यास के लिए इस्तेमाल किया जाता है और हादसे के समय यह बिना किसी गोला-बारूद के उड़ान भर रहा था। यह दुर्घटना चीन की सीमा से लगे रूस के अमूर प्रांत में एक गांव के पास निर्जन इलाके में हुई। घटना से जुड़ा एक वीडियो भी सामने आया है। इस फूटेज में विमान को आग की लपटों और काले धुएं के गुबार से घिरा हुआ देखा जा सकता है।

बलूचिस्तान में घर पर रॉकेट लॉन्चर से हमला

क्वेटा, एजेंसी। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में हिंसा की एक और घटना सामने आई है। केच जिले के बुलेदा इलाके में अज्ञात हथियारबंद लोगों ने एक घर पर रॉकेट लॉन्चर और गोलीबारी से हमला कर दिया। हमले में एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य घायल हो गए। हमलावर जाते समय 12 वर्षीय एक बच्चे को कथित तौर पर अगवा कर ले गए। बच्चे का अब तक कोई पता नहीं चल सका है। मानवाधिकार संगठन ह्यूमन राइट्स काउंसिल ऑफ बलूचिस्तान (एचआरसीबी) ने मंगलवार को घटना की जानकारी देते हुए बताया कि केच के बुलेदा स्थित अलतूर इलाके में एक घर को निशाना बनाकर यह हमला किया गया। संगठन की अनुसार, हमले में सरदार याह्ना और आयशा की मौत हुई है, जबकि शायहक और शाहब घायल हुए हैं।

क्वाइट हाउस के एआई सेफ्टी समझौते का सुंदर पिचाई ने किया समर्थन

वाशिंगटन , एजेंसी। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई और अन्य बड़ी टेक्नोलॉजी कंपनियों के प्रमुखों ने क्वाइट हाउस के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत कंपनियां एडवांस्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम बनाते समय इंटरनल कंट्रोल, स्वतंत्र ऑडिट और बोर्ड स्तर की जांच का वादा करेंगी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस स्वेचिक्क समझौते को ‘नैतिक रूप से बाध्यकारी’ बताया और कहा कि कंपनियां काफी हद तक खुद ही अपनी निगरानी करेंगी। इस समझौते का टाइटल ‘क्वाइट हाउस अकाई ऑन सुपरइंटेलिजेंस जॉइंट कमिटेमेंट ऑन फ्रैटियर एसआई

रिस्पॉन्सिबिलिटी’ है। यह एडवांस्ड एआई मॉडल बनाने वाली कंपनियों के लिए साझा उम्मीदें तय करता है।

सुरक्षा उपायों में इंटरनल रिस्क रिव्यू, बाहरी मूल्यांकनकर्ता और कंपनी बोर्ड द्वारा स्वतंत्र समीक्षा शामिल है। यह समझौता कोई कानूनी रूप से लागू होने वाला मानक या सरकारी नियामक नहीं बनाता है। भारतीय मूल के टेक एगजीक्यूटिव पिचाई ने कहा कि इंडस्ट्री से संभावित जोखिमों को लेकर ज्यादा जिम्मेदारी लेने के लिए कहा गया है। सुंदर पिचाई ने कहा, ‘मुझे लगता है कि यह कदम ऐतिहासिक और बहुत महत्वपूर्ण है, और इस टेक्नोलॉजी के असाधारण फायदे हैं। हमें यह

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी

नागरिक जो अपना पहला पासपोर्ट बनवाना चाहते हैं, वे अगले साल से पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन पूरी कर सकेंगे। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने यह घोषणा तब की जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सरकारी सेवाओं के लिए एक सिंगल डिजिटल पोर्टल लॉन्च किया। इस प्रस्तावित बदलाव से पहली बार आवेदन करने वालों के लिए पासपोर्ट स्वीकार करने वाली जगह, जैसे पोस्ट ऑफिस, लाइब्रेरी या लोकल सरकारी ऑफिस, पर जाने की मौजूदा जरूरत खत्म हो जाएगी। वाशिंगटन में ‘अमेरिकाडॉटजीओबी’ के लॉन्च के मौके पर रुबियो ने कहा, ‘अगले साल से, अमेरिकी अपने पहले पासपोर्ट के लिए पूरी तरह से ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। ‘

यह घोषणा उन लोगों के लिए खास तौर पर अहम है जो बाद में अमेरिकी नागरिक बने हैं या जो प्रवासी समुदायों से हैं और अमेरिका में पैदा हुए हैं। इनमें लाखों भारतीय-अमेरिकी भी शामिल हैं जिन्हें विदेश यात्रा के लिए अमेरिकी पासपोर्ट की जरूरत होती है। रुबियो ने कहा कि मौजूदा सिस्टम में, स्टेट डिपार्टमेंट की वेबसाइट पर जरूरी जानकारी मिलने के बाद भी आवेदकों को कई चरणों से गुजरना पड़ता है।

प्रस्तावित सिस्टम के तहत, आवेदक अपनी जानकारी सभ्यित



करने, फोटो अपलोड करने और आवेदन की प्रक्रिया पूरी करने के लिए ‘अमेरिकाडॉटगॉव’ का इस्तेमाल कर सकेंगे। रुबियो ने कहा, ‘न फॉर्म प्रिंट करने की जरूरत, न ड्राफ्टरों में जाकर फोटो खिंचवाने की मजबूरी, न अपॉइंटमेंट, न लाइन, और न ही किसी बिचौलिए को पैसे देने की जरूरत, जबकि यह सुविधा आपको आसानी से मिलनी चाहिए। आप ‘अमेरिकाडॉटगॉव’ को बताते हैं कि आप क्या करना चाहते हैं और यह आपको हर कदम पर गाइड करता है। प्रशासन ने ऑनलाइन पहली बार आवेदन करने की सुविधा शुरू होने की कोई सटीक तारीख नहीं बताई, बस इतना कहा कि यह सेवा अगले साल उपलब्ध हो जाएगी। ट्रंप ने एक एजीक्यूटिव ऑर्डर पर साइन किए, जिसके तहत ‘अमेरिकाडॉटगॉव’ को उन लोगों के लिए सेंट्रल ऑनलाइन

पॉइंट बनाया गया जो फेडरल जानकारी और सेवाएं चाहते हैं।

क्वाइट हाउस ने कहा कि पासपोर्ट रिन्यूअल और मेडिकेयर एनरोलमेंट की सुविधा इस साल के अखिर में ‘अमेरिकाडॉटगॉव’ पर उपलब्ध हो जाएगी। पहली बार पासपोर्ट के लिए आवेदन की सुविधा, रुबियो द्वारा घोषित स्टेट डिपार्टमेंट के अलग विस्तार के तहत आएगी।

एजीक्यूटिव ऑर्डर में ‘अमेरिकाडॉटगॉव’ को फेडरल सरकार के लिए एक ‘यूनिफाइड डिजिटल फ्रंट डोर’ (एक ही जगह से सभी डिजिटल सेवाओं तक पहुंच) बताया गया। ऑर्डर में कहा गया, ‘अमेरिकाडॉटगॉव सिर्फ एक और वेबसाइट, सर्वे इंजन या सरकारी लिंक की डायरेक्टरी नहीं होगी। ‘

इसमें कहा गया कि यूजर साइन इन कर सकेंगे, आसान भाषा में स्वावल पूछ सकेंगे, जवाब पा सकेंगे और कानूनी तौर पर अधिकृत और तकनीकी रूप से उपलब्ध होने पर ट्रांजेक्शन पूरे कर सकेंगे। जनरल सर्विसेज एडमिनिस्ट्रेशन, नेशनल डिजाइन स्टूडियो और ऑफिस ऑफ मैनेजमेंट एंड बजट (ओएमबी) को यह प्लेटफॉर्म चलाने और इसे फेडरल सरकार की मौजूदा ऑथेंटिकेशन सर्विस, ‘लॉगइनडॉटगॉव’ से जोड़ने का निर्देश दिया गया था। यह आदेश उन ऑनलाइन फेडरल सेवाओं पर लागू होता है जिनका इस्तेमाल 12

एफबीआई के हजारों कर्मियों का निजी डाटा चोरी: एजेंटों की सुरक्षा पर भी मंडराया खतरा; कैसे लगी इतनी बड़ी सेंध?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई के हजारों मौजूदा व पूर्व कर्मियों का संवेदनशील निजी डाटा चोरी होना अमेरिकी इतिहास में सबसे गंभीर डाटा चोरी है। साइबर अपराधी समूह शाइनीहंटर्स ने इसे डाटा एजेंसी के नौकरी पोर्टल से चुराया और ऑनलाइन लोक करने की धमकी भी दी थी। इस हमले में हजारों कर्मियों के डाटा चोरी के साथ एजेंटों की जान को भी खतरा बताया जा रहा है। डाटा चोरी में मौजूदा और पूर्व कर्मियों के नाम, घर के पते, फोन नंबर, दफ्तरी ईमेल, सोशल मीडिया के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शुरुआती सैन्य रिपोर्ट्स और स्थानीय मीडिया के अनुसार, उड़ान भरने के तुरंत बाद विमान के इंजनों में आग लग गई या पयूल टैंक में विस्फोट हो गया, जिसके चलते विमान सीधे जमीन पर आ गिरा और आग के गोले में तब्दील हो गया। मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह विमान नियमित सैन्य अभ्यास के लिए इस्तेमाल किया जाता है और हादसे के समय यह बिना किसी गोला-बारूद के उड़ान भर रहा था। यह दुर्घटना चीन की सीमा से लगे रूस के अमूर प्रांत में एक गांव के पास निर्जन इलाके में हुई। घटना से जुड़ा एक वीडियो भी सामने आया है। इस फूटेज में विमान को आग की लपटों और काले धुएं के गुबार से घिरा हुआ देखा जा सकता है।

अपराधी या शत्रु देश को डाटा बिचने की चिंता : हजारों कर्मचारियों के चोरी हुए डाटा में नशीले पदार्थ और रूस-चीन-ईरान से जुड़े राष्ट्रीय सुरक्षा डेस्क लगाई सेंध : शाइनीहंटर्स के मुताबिक उन्होंने ओरेकल पीपलसॉफ्ट और सॉफ्टवेयर में एक जीरो-डे यानी पहले से अनजान खामी का इस्तेमाल किया। हालांकि गूगल ने बताया कि उसकी खुफिया टीम ने हाल में शाइनीहंटर्स को ओरेकल पीपलसॉफ्ट की उस खामी के जरिये सार्वजनिक करने की बजाय इसे दूसरे

अपराधी या किसी देश को बेच सकते हैं। ब्रिटेन की साइबर सुरक्षा एजेंसी के पूर्व प्रमुख सिरन मार्टिन के अनुसार इस सेंध का एफबीआई की परिचालन-क्षमता पर बुरा असर पड़ सकता है। यह एक दशक समूह शाइनीहंटर्स ने इसे डाटा एजेंसी के नौकरी पोर्टल से चुराया और ऑनलाइन लोक करने की धमकी भी दी थी। इस हमले में हजारों कर्मियों के डाटा चोरी के साथ एजेंटों की जान को भी खतरा बताया जा रहा है। डाटा चोरी में मौजूदा और पूर्व कर्मियों के नाम, घर के पते, फोन नंबर, दफ्तरी ईमेल, सोशल मीडिया के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शुरुआती सैन्य रिपोर्ट्स और स्थानीय मीडिया के अनुसार, उड़ान भरने के तुरंत बाद विमान के इंजनों में आग लग गई या पयूल टैंक में विस्फोट हो गया, जिसके चलते विमान सीधे जमीन पर आ गिरा और आग के गोले में तब्दील हो गया। मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह विमान नियमित सैन्य अभ्यास के लिए इस्तेमाल किया जाता है और हादसे के समय यह बिना किसी गोला-बारूद के उड़ान भर रहा था। यह दुर्घटना चीन की सीमा से लगे रूस के अमूर प्रांत में एक गांव के पास निर्जन इलाके में हुई। घटना से जुड़ा एक वीडियो भी सामने आया है। इस फूटेज में विमान को आग की लपटों और काले धुएं के गुबार से घिरा हुआ देखा जा सकता है।

बदला था मकसद शाइनीहंटर्स के अनुसार उन्होंने एफबीआई पर इस्लाम हमला किया क्योंकि उसे बदला लेना था। दरअसल, एफबीआई ने वसंत में चेतावनी जारी की थी कि शाइनीहंटर्स समूह पीड़ितों को धमकाकर परेशान करता है। हैकरों ने मांग की थी कि एफबीआई उस चेतावनी को हटाए। ऐसे लगाई सेंध : शाइनीहंटर्स के मुताबिक उन्होंने ओरेकल पीपलसॉफ्ट और सॉफ्टवेयर में एक जीरो-डे यानी पहले से अनजान खामी का इस्तेमाल किया। हालांकि गूगल ने बताया कि उसकी खुफिया टीम ने हाल में शाइनीहंटर्स को ओरेकल पीपलसॉफ्ट की उस खामी के जरिये सार्वजनिक करने की बजाय इसे दूसरे

उत्तर कोरिया के पास ‘काफी बड़ा’ परमाणु भंडार, मेरे रहते किम को कोई परेशानी नहीं: ट्रंप

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर उत्तर कोरिया के लीडर किम जोंग उन के साथ अपने अच्छे संबंधों का हवाला दिया है। उन्होंने कहा है कि उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग-उन के पास ‘काफी बड़ा’ परमाणु हथियार भंडार है। ट्रंप के मुताबिक जब तक वह स्वयं पद पर हैं, किम ‘ठीक’ रहेंगे, क्योंकि उनके मुताबिक उत्तर कोरियाई नेता उनका सम्मान करते हैं और उन्हें पसंद करते हैं। ट्रंप ने यह टिप्पणी मंगलवार को क्वाइट हाउस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों के साथ बैस्केट के बाद पत्रकारों से बातचीत के दौरान की। उनसे सवाल किया गया था कि जब वह ईरान को परमाणु हथियार रखने की अनुमति नहीं देने की बात कहते हैं, तो फिर उत्तर कोरिया के पास परमाणु हथियार होने को लेकर उनका



रख क्या है? जवाब में ट्रंप ने कहा, ‘किम जोंग-उन के पास काफी बड़ा परमाणु क्षमता वाला भंडार है। जब तक मैं आसपास हूं, वह ठीक रहेगा।’ ट्रंप ने इसकी वजह बताते हुए कहा कि किम से अपने परमाणु क्षमता के बारे में पसंद करते हैं।

ट्रंप की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब उत्तर कोरिया के परमाणु और मिसाइल कार्यक्रम को लेकर अमेरिका तथा उसके सहयोगियों की चिंता बनी हुई है। उत्तर कोरिया लंबे समय से अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम को आगे बढ़ाता रहा है और

किम जोंग-उन इसके विस्तार को देश की सुरक्षा नीति का अहम हिस्सा बताते रहें हैं।

ट्रंप और किम के बीच पहले भी कई दौर की व्यक्तिगत कूटनीति हो चुकी है। हालांकि, उनके इस ताजा बयान में किसी नई बैठक या वार्ता की घोषणा नहीं की गई है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने बयान में किम के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि किम उनके प्रति सम्मान और सकारात्मक भावना रखते हैं और इसी वजह से उनके पद पर रहते हुए उत्तर कोरियाई नेता के साथ स्थिति नियंत्रण में रहने का संकेत दिया। हालांकि, ट्रंप ने उत्तर कोरिया के परमाणु भंडार की कोई संख्या नहीं बताई। योनहपू की रिपोर्ट में भी उनके बयान में परमाणु हथियारों की सटीक संख्या का उल्लेख नहीं है।

होनी चाहिए। उन्होंने कहा, ‘इनोवेशन, टेक्नोलॉजी और सुरक्षा के बीच कोई टकराव नहीं है।’ उन्होंने कहा, ‘हम इस टेक्नोलॉजी को आगे बढ़ाने जा रहे हैं जो मानवता के लिए इतनी महत्वपूर्ण है, हमारे देश की भविष्य की समृद्धि के लिए इतनी महत्वपूर्ण है। हम इसे जिम्मेदारी और सुरक्षित तरीके से करेंगे।’ एशॉपिक के सीईओ डारियो अमोदेई ने ज्यादा सतर्कता अपनाना। उन्होंने कहा कि एआई में बड़े फायदे हैं, जिसमें मेडिसिन में तकवी भी शामिल है, लेकिन इसमें गंभीर खतरें भी हैं। डारिओ अमोदेई ने कहा, ‘मुझे लगता है कि टेक्नोलॉजी में बहुत वास्तविक जोखिम हैं।

अमेरिकी सैन्य अंडे के पास पांच गिरफ्तार, फिर जमानत पर रिहा; नहीं मिले विस्फोटक

लंदन, एजेंसी। इंग्लैंड में अमेरिकी वायुसेना के एक अंडे पर सदिग्ध बम साजिश की जांच जारी है। इस मामले में ब्रिटेन की आतंकवाद रोधी पुलिस ने पांच सदिग्धों को गिरफ्तार किया और फिर उन्हें रिहा कर दिया। यह फैसला अचानक लिया गया। इसके बाद घटना की लेकर सवाल और अनिश्चितता बढ़ गई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को इस पर हैरानी जताई। पांचों युवा ब्रिटिश पुरुष हैं। उन्हें रविवार को आरएफ फेयरफोर्ड अंडे के पास गिरफ्तार किया गया था। उन पर विस्फोटक और आतंकवाद से जुड़े आरोप हैं। लेकिन एक दिन बाद उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया। ट्रंप ने कहा, ‘मैं ऐसा नहीं करता’। आरएफ फेयरफोर्ड का इस्तेमाल अमेरिकी बमवर्षक विमानों ने दशकों से किया है। इन विमानों का इस्तेमाल पश्चिम एशिया के कई संघर्षों में हुआ है। इसमें इस साल ईरान के साथ हुआ युद्ध भी शामिल है। आतंकवाद रोधी जांचकर्ता मामले में ‘कई पहलुओं’ की जांच कर रहे हैं। इनमें यह भी शामिल है कि क्या सदिग्धों का ईरान से कोई संबंध था। ईरान ने इस मामले में किसी भी तरह की भूमिका से इनकार किया है। ब्रिटेन की आतंकवादी रोधी पुलिस के प्रमुख लॉरेंस टेलर ने अहम जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पांचों सदिग्ध ब्रिटिश नागरिक हैं। सभी की उम्र 20 साल के आसपास है। उन्होंने कहा कि पांचों पर पकड़ी शर्तें लागू हैं। वे पूरी तरह जांच के दायरे में हैं। टेलर ने मंगलवार को पुष्टि की कि तीन वैन की जांच की गई। ये वैन

अंडे के पास मिली थीं। इनमें कोई विस्फोटक नहीं मिला। टेलर ने कहा कि जमानत पर छोड़े गए सदिग्धों को ‘बहुत सख्त शर्तों’ का पालन करना होगा। उन्होंने कहा कि यह फैसला कुछ लोगों के लिए हैरान करने वाला हो सकता है। लेकिन यह जांच से जुड़ा फैसला है। यह अनुभव और रणनीति पर आधारित है। अमेरिकी विदेश मंत्री ने क्या कहा : अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने भी मामले पर बात की। उन्होंने फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में कहा कि इसमें ‘स्पष्ट रूप से किसी विदेशी पक्ष का हाथ है’। हालांकि, उन्होंने किसी देश का नाम नहीं लिया। उन्होंने मामले से जुड़ी और जानकारी भी नहीं दी। रुबियो ने कहा कि कुछ लोग इस बात से परेशान हैं। वजह यह है कि जांच के दौरान कुछ सदिग्धों को जमानत पर छोड़ दिया गया।

सदिग्ध वैन में नहीं मिला कोई विस्फोटक : मंगलवार को भी आरएफ फेयरफोर्ड के पास पुलिस की घेराबंदी जारी रही। तीन वैन के आसपास सुरक्षा घेरे लगाए गए थे। हथियारबंद पुलिसकर्मी और आतंकवाद रोधी अधिकारी मौके पर जांच कर रहे थे।

एक स्थानीय महिला किसान ने पुलिस को फोन किया था। उसने रविवार सुबह पुलिस को सूचना दी। उसने बताया कि घर लौटते समय उसने वैन देखीं। ये वैन हवाई अंडे के पास सड़क को बाधित रही थीं। महिला ने पास में कुछ लोगों को भी देखा था। उनमें से कुछ ने अपने चेहरे ढक रखे थे।

अमेरिका में 2 भारतीयों पर नकली दवा बेचने का आरोप: चीन से मंगाते थे वजन घटाने की दवा



इसके बॉक्स, दवा की जानकारी वाली पर्ची, इंजेक्शन पेन का लेबल और यहां तक कि सुई भी असली दवा जैसी थी। इसका मकसद यह था कि खरीदारों को दवा नकली होने का पता न चले और उन्हें लगे कि वे कंपनी की असली दवा खरीद रहे हैं। दोनों आरोपियों की पहचान स्वप्नदीप रॉय और विक्की रमनचा के रूप में हुई है।

एफडीए ने 2023 में नकली ओजेम्पिक को लेकर चेतावनी दी थी : अमेरिकी दवा नियामक एफडीए ने दिसंबर 2023 में नकली ओजेम्पिक की कुछ खेप पकड़ी थी। इसके बाद लोगों को नकली दवा से सावधान रहने की चेतावनी भी दी गई थी। अमेरिकी अधिकारियों का आरोप है कि इसके बावजूद दोनों आरोपी नकली

एआई की मनमानी पर लगोगा ब्रेक: ट्रंप के साथ टेक दिग्गजों ने किया मंथन, कितने स्तर पर होगी सुरक्षा निगरानी?

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रमुख टेक्नोलॉजी कंपनियों के मुख्य अधिकारियों ने मंगलवार को एक संयुक्त समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत, वे अत्याधुनिक कंप्यूटिंग मॉडल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चार स्तरों वाले कंट्रोल और ऑडिट का एक व्यापक ढांचा लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। साथ ही भविष्य में इसे कानून का रूप देने की संभावना भी खुली रखी गई है। वहां, इस पर ट्रंप ने कहा, ‘मुझे लगता है कि मैं जबरदस्त सेल्फ-पुलिसिंग (खुद पर नजर रखने की प्रक्रिया) देख रहा हूं। और वे समझते हैं कि उन्हें खुद पर नजर रखनी होगी।’ ‘फ्रैटियर जिम्मेदारियों पर संयुक्त प्रतिबद्धता’ नाम का यह दस्तावेज क्वाइट हाउस में हुई एक हाई-लेवल सесс के बाद जारी किया गया। यह समिट प्रशासन की ओर से औपचारिक रूप से सुपर इंटेलिजेंस नाम दिए गए विषय पर बुलाई गई थी। यह समिट टेक कंपनियों के प्रमुखों के उन सुझावों के बाद हुई जिनमें उन्होंने फ्रैटियर एआई के विकास की गति धीमी करने या नियंत्रण खोने के जोखिम की बात कही थी। समझौते में कौन-कौन शामिल है : इस समझौते पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ-साथ प्रमुख टेक डेवलपर्स के प्रमुखों के भी निजी हस्ताक्षर हैं। इसमें गूगल के सुंदर पिचाई, एशॉपिक के डारियो अमोदेई, मेटा के मार्क जुकरबर्ग, ओपनएआई के ग्रेग ब्रॉकमैन,



एक्सएआई के एलन मस्क और एनवीडिया के जेन्सेन हुआंग।

संयुक्त घोषणा में क्या कहा गया है : संयुक्त घोषणा में कहा गया है, ‘अमेरिकी लोगों और दुनिया के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए हमारा मानना ​​है कि हर कंपनी की यह जिम्मेदारी है कि वह अपनी टेक्नोलॉजी को सुरक्षित तरीके से विकसित करे। ऐसा करे जिससे ग्राहकों और आम जनता का भरोसा बढ़े।’ इसके साथ ही, इसमें यह भी कहा गया है कि जो कंपनियां ‘फ्रैटियर मॉडल’ (अत्याधुनिक मॉडल) को ट्रेन और डिप्लॉय (लागू) कर रही हैं, उन्हें समस्याओं को तुरंत सुलझाने के लिए मजबूत प्रक्रियाएं अपनानी होंगी।

पहले स्तर के तौर पर, कंपनियों के लिए जरूरी है कि वे ट्रेनिंग और डिप्लॉयमेंट के दौरान अपने मॉडल की क्षमताओं और अलाइनमेंट (तालमेल) पर नजर रखने के लिए मजबूत इंटरनल कंट्रोल लागू करें। इसमें साइबर सिस्कोरिटी, बायो-सिस्कोरिटी और केमिकल खतरों जैसे क्षेत्रों पर ध्यान देना शामिल है। यह पक्का करना है कि उनके मॉडल अनजाने तरीकों से टेक्निकल सिस्टम को हैक न करें या उन तक पहुंच न बनाएं।

टिवशा शर्मा सुसाइड-रिटायर्ड जज से सीबीआई ने हटाय़ा दहेज उत्पीड़न का आरोप

भोपाल(एजेंसी)। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने टिवशा शर्मा आत्महत्या मामले की आरोपी रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह के खिलाफ दहेज के लिए परेशान करने का आरोप हटा लिया है। गिरिबाला सिंह के वकील ने बुधवार को हाईकोर्ट को यह जानकारी दी, साथ ही अपनी मुवक़िल के लिए जमानत अर्जी भी दाखिल की। गिरिबाला सिंह अपने बेटे और टिवशा के पति समर्थ सिंह के साथ फ़िलहाल जेल में हैं। इस नई जानकारी के बाद, हाईकोर्ट ने गिरिबाला सिंह के वकील को जमानत की संशोधित अर्जी दाखिल करने का निर्देश दिया है और मामले की अगली सुनवाई के लिए 8 अक्टूबर की तारीख तय की है। वकील सुरेंद्र सिंह ने कोर्ट को बताया कि 14 अगस्त को दाखिल चार्जशीट में सीबीआई ने गिरिबाला सिंह पर दहेज से जुड़े कोई आरोप नहीं लगाए हैं। चार्जशीट में कहा गया है कि गिरिबाला और समर्थ सिंह ने भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 85 (पति और उसके परिवार के सदस्यों द्वारा क्रूरता और उत्पीड़न), 108 (आत्महत्या के लिए उकसाना) और 3(5) (साझा इरादा) के तहत अपराध किए हैं। हालांकि, सीबीआई को दहेज के लिए उत्पीड़न से जुड़ा कोई ठोस सबूत नहीं मिला है। मूल जमानत अर्जी में इस बात का जिक्र नहीं था कि सीबीआई ने उन पर दहेज से जुड़े आरोप नहीं लगाए हैं, जिसके चलते हाईकोर्ट ने संशोधित अर्जी दाखिल करने को कहा।

मंदिर में दो साधुओं की हत्या, शव जलाने का आरोप मुख्य आरोपी हिरासत में

शाहजहापुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के शाहजहापुर जिले में मंदिर परिसर में दो साधुओं की हत्या और उनके शव जलाने की घटना से इलाके में सनसनी फैल गई। मामला सुशा गांव का है। पुलिस ने घटना के सिलसिले में गांव के ही सुमित नामक युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। मृतकों की पहचान साधु गोपालदास और उनके शिष्य बिहारीदास के रूप में हुई है। दोनों मंदिर परिसर में ही रहते थे। पुलिस के मुताबिक, गुरुवार सुबह करीब सात बजे ग्रामीणों ने गांव के बाहर स्थित देवस्थान परिसर में दो शव जली हुई अवस्था में पड़े होने की सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस और कोरैसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम और लिए भेज दिया है, ताकि मौत के कारण और घटना के समय से जुड़ी जानकारी स्पष्ट हो सके।

फीज बैंक खातों के इस्तेमाल की ममता बनर्जी गुट को नहीं मिली अनुमति

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने ममता बनर्जी के नेतृत्व वाले तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) गुट को करीब 804 करोड़ रुपये वाले चार फीज बैंक खातों को संचालित करने की अंतरिम अनुमति देने से इंकार किया है। जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस पीबी वराले की पीठ ने कलकत्ता हाईकोर्ट के उस आदेश में हस्तक्षेप जमा है। इन खातों को पश्चिम बंगाल पुलिस ने डेबिट के लिए फीज किया था। ममता बनर्जी गुट ने खातों के संचालन की अनुमति मांगते हुए दावा किया था कि उन्हें फीज करने के आधार वाली एफआईआर में खामियां हैं। पार्टी की ओर से दलील दी गई कि खातों पर रोक से उसके कामकाज पर असर पड़ रहा है।

चुनावी सुधार पर सोनम वांगचुक... सभी को मिलकर करना होगा प्रयास

नई दिल्ली (एजेंसी)। सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद सोनम वांगचुक ने चुनावी प्रक्रिया में सुधार को लेकर कहा कि इस दिशा में किसी एक व्यक्ति के बजाय सभी संबंधित पक्षों को मिलकर काम करना होगा। यह प्रतिक्रिया कॉंग्रेस जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके की उस अपील के बाद सामने आई है, जिसमें उन्होंने चुनावी प्रक्रिया में सुधार होने तक विपक्षी दलों से चुनावों में हिस्सा नहीं लेने की बात कही थी। दीपके ने हाल में चुनाव आयोग को लेकर भी कई मांगें उठाकर विरोध का ऐलान किया है। वांगचुक ने पॉडकास्ट में चुनाव बहिष्कार के बजाय चुनावी प्रक्रिया को सुधारने के प्रयासों पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों को पूरी ताकत के साथ चुनावी प्रक्रिया को साफ करने के लिए काम करना चाहिए और इसके बाद चुनाव में जरूर हिस्सा लेना चाहिए। इस तरह उन्होंने चुनाव से दूरी बनाने के बजाय प्रक्रिया में सुधार के प्रयासों को प्राथमिकता देने की बात कही। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग से जुड़े आंदोलन के संदर्भ में जब पूछा गया कि क्या दीपके अपने दम पर यह लड़ाई लड़ सकते हैं, तब वांगचुक ने कहा कि यह किसी एक व्यक्ति को मुद्दा नहीं होना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने पटारखों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने से किया इनकार

नई दिल्ली, एजेंसी। सर्वोच्च न्यायालय ने संकेत दिया है कि वह दिवाली के दौरान पटारखे फोड़ने के लिए तयशुदा घंटों की इजाजत दे सकता है, इस प्रकार उसने पटारखों पर पूर्ण प्रतिबंध या पूरी तरह से छूट दोनों की संभावनाओं को खारिज कर दिया है। न्यायमूर्ति एमएम सुरेंद्रेश और न्यायमूर्ति पीबी वराले की पीठ ने कहा कि किसी भी न्यायमक ढांचे में दिवाली से जुड़ी धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं के साथ-साथ वायु और ध्वनि प्रदूषण की चिंताओं, खासकर समाज के संवेदनशील तबके पर उनके असर को भी ध्यान में रखना होगा। पीठ ने स्पष्ट किया, हम पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाने जा रहे हैं। न ही हम दिन रात पटारखे फोड़ने की अनुमति देंगे। न्यायालय ने माना कि जहां पूर्ण प्रतिबंध जन भावनाओं को घभावित कर सकता है, वहीं बेलगाम उपयोग पर्यावरण और बुजुर्गों, बच्चों तथा बीमारों पर गंभीर बुरा असर डाल सकता है। न्यायालय ने कहा कि केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी)



से रिपोर्ट मिलने के बाद वह यह तय करने पर विचार करेगा कि पटारखों का इस्तेमाल किन खास समय-सीमाओं के दौरान किया जा सकेगा। अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने सीपीसीबी को बेरियम आधारित पटारखों पर अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए 15 अक्टूबर तक का समय देने का अनुरोध

किया, यह बताते हुए कि ऐसे पटारखों का खुले में परीक्षण अभी बाकी है। भाटी ने यह भी सुझाव दिया कि संयुक्त पटारखों या 'लड्डे' के निर्माण की अनुमति कुछ शर्तों के अधीन दी जा सकती है। अदालत ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के पक्ष में संकेत दिया, अपने आदेश में लिखा, सुनवाई के दौरान अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने संयुक्त पटारखों से

संबंधित जानकारी प्रस्तुत की। हम दिए गए सुझावों को स्वीकार करने के पक्ष में हैं। अदालत 2015 से लॉबित उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य राज्यों में उस अवधि के दौरान पटारखों पर प्रतिबंध से संबंधित मांग की गई है जब वायु प्रदूषण का स्तर आमतौर पर खराब हो जाता है। राष्ट्रीय राजधानी में पटारखों के निर्माण, बिक्री और उपयोग को नियंत्रित करने के लिए अदालत पिछले कई वर्षों में कई आदेश पारित कर चुकी है। लगातार खराब वायु गुणवत्ता को देखते हुए पहले दिल्ली में पटारखों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया था, हालांकि पिछले साल सर्वोच्च न्यायालय ने दिवाली के आसपास सीमित अवधि के लिए दिल्ली-एनसीआर में ग्रीन पटारखों की बिक्री और उपयोग की अनुमति दी थी। इस वर्ष जुलाई और अगस्त में पीठ ने सीपीसीबी से राय मांगी थी कि क्या पटारखों की कुछ श्रेणियों के लिए प्रतिबंधों में ढील दी जा सकती है।

विजय पर कनिमोड़ी का तंज, सी-फेसिंग ऑफिस से शायद प्रधानमंत्री बनने की चाह’

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु में प्रस्तावित नए सचिवालय को लेकर मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय और विपक्ष के बीच विवाद तेज हुआ है। डीएमके सांसद कनिमोड़ी ने मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए परियोजना को उनके ज्योतिषी रिकी राधन पंडित वेट्टिवेल से जोड़ा है। उन्होंने व्यंग्य कर कहा कि संभव है ज्योतिषी ने विजय से कहा हो कि समुद्र की ओर देखने से वह मुख्यमंत्री बने हैं और फिर समुद्र की ओर देखने से प्रधानमंत्री बन सकते हैं। कनिमोड़ी ने यह टिप्पणी डीएमके के एक कार्यक्रम में की। विजय सरकार ने चेन्नई के पट्टिनापक्कम में करीब 26.36 एकड़ जमीन पर नए विधानसभा-सह-सचिवालय परिसर की योजना बनाई है। प्रस्तावित 15 मंजिला परिसर का निर्मित क्षेत्र करीब 20 लाख वर्ग फुट और अनुमानित लागत 1,200 करोड़ रुपये है। परियोजना के लिए तमिलनाडु हाउसिंग बोर्ड और अन्य सरकारी जमीन के इस्तेमाल की योजना है। इस परियोजना का मछुआरा समुदाय और विपक्षी दल विरोध कर रहे हैं। मछुआरों का कहना है कि प्रस्तावित स्थल उनके पारंपरिक रोजगार और तटीय गतिविधियों से जुड़ा है। रिपोर्टों के अनुसार, पट्टिनापक्कम और



आसपास के इलाकों में करीब 1,500 मछुआरा परिवार क्षेत्र का इस्तेमाल नाव रखने, जाल सुखाने और उनकी मरम्मत जैसे कामों के लिए करते हैं। परियोजना के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी हुए हैं। नए सचिवालय की योजना को लेकर मद्रास हाईकोर्ट में भी याचिका दायर की गई है, जिसमें परियोजना पर रोक लगाने की मांग की गई है। याचिका में सरकारी खर्च, मछुआरों की आजीविका और तटीय पर्यावरण को लेकर सवाल उठाए गए हैं। रिकी राधन पंडित वेट्टिवेल को विजय का करीबी और ज्योतिषी बताया जाता है। मई में विजय सरकार ने उन्हें मुख्यमंत्री के ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी (ओएसडी) के रूप में नियुक्त किया था, लेकिन राजनीतिक विरोध के बाद आगले ही दिन नियुक्ति रद्द कर दी गई थी।

विपक्ष ने ‘वोट चोरी’ और ईवीएम के खिलाफ छेड़ा राष्ट्रव्यापी अभियान

नई दिल्ली, एजेंसी। विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन ने बुधवार को 'वोट चोरी' और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़ी कथित अनियमितताओं के खिलाफ एकजुट होने का संकल्प लेते हुए देशव्यापी अभियान चलाने और निर्वाचन आयोग के मुख्यालय तक विपक्षी सांसदों का मार्च निकालने का फैसला किया। गठबंधन ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की जगह मतपत्रों से चुनाव करने की भी मांग की। गठबंधन ने 19 घटक दलों के नेताओं ने तीन घंटे से अधिक समय तक मंचन के बाद छह-सूत्री साझा कार्ययोजना पर सहमति जताई। इसके तहत आगामी 2 से 8 अक्टूबर तक जिला स्तर पर 'लोकतंत्र बचाओ' मार्च निकाले जाएंगे। 6 अक्टूबर को विपक्षी सांसद निर्वाचन आयोग तक मार्च करेंगे और अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में राष्ट्रपति से मुलाकात के लिए संसद मंथन। विपक्षी दलों की ओर से 5 बड़ी रैलियां आयोजित की जाएंगी, जिसमें 1 नवंबर को दिल्ली में विशाल रैली भी शामिल है।

विपक्षी नेताओं ने उच्चतम न्यायालय से अनुरोध किया कि वह एसआईआर और चुनाव संबंधी सभी लॉबित मामलों का जल्द निपटारा करे। बैठक के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरेगे ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह निर्वाचन आयोग का इस्तेमाल 'कठपुतली' की तरह कर रहे हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि 'इंडिया' गठबंधन के घटक दल भारतीय संविधान के 'सामूहिक रक्षक' हैं और वे मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने वालों को सजा मिले। उन्होंने उम्मीद जताई कि विपक्षी दल आने वाले कुछ महीनों में देश में महत्वपूर्ण बदलाव लाएंगे। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी ज्ञानेश कुमार को 'चोर और डाकू' बताते हुए उनके तत्काल इस्तीफे की मांग की। बनर्जी ने आरोप लगाया कि चुनावी प्रक्रिया में 'वोट चोरी' की गई और पूर्व पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद ईवीएम जलाकर सबूत नष्ट करने की कोशिश की गई। इस

महत्वपूर्ण बैठक में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरेगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और ममता बनर्जी सहित विभिन्न विपक्षी दलों के नेता शामिल हुए। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने ऑनलाइन माध्यम से अपने सुझाव साझा किए। आम आदमी पार्टी और द्रमुक बैठक में शामिल नहीं हुए, लेकिन उन्होंने वैचारिक रूप से गठबंधन के साथ होने की बात कही। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव अपने राज्यसभा उम्मीदवारों के नामांकन के कारण अनुपस्थित रहे। वाम दलों ने निर्वाचन आयोग के खिलाफ आंदोलन को 'इंडिया' गठबंधन तक सीमित नहीं रखने की अपील की, बल्कि सभी गैर-राज्य दलों, नागरिक समाज, कलाकारों और प्रमुख हस्तियों को इसमें शामिल करने का आह्वान किया। यह बैठक के प्रत्येक जिले में हुई है जब मतदाता सूची के 'एसआईआर' में किन अनियमितताओं को लेकर निर्वाचन अधिकारियों की आपत्तियों से संबंधित खबरें सामने आई थीं।

दिल्ली-एनसीआर में इस साल एक्क्यूआई पांच सालों में सबसे कम, सितंबर में 102 रहा

-2025 में 105, 2024 में भी 105, 2023 में 108 और 2022 में 104 रहा था

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-एनसीआर की हवा में सुधार का ट्रेंड जारी है। राजधानी ने इस साल 2026 के सितंबर महीने में पिछले पांच सालों का सबसे कम एक्क्यूआई दर्ज किया। आकड़ों के मुताबिक सितंबर 2026 में दिल्ली का मासिक औसत एक्क्यूआई 102 रहा, जबकि 2025 में 105, 2024 में भी 105, 2023 में 108 और 2022 में 104 रहा था यानी सिर्फ 146 दिन ही हवा इस श्रेणी में इस बार सितंबर की हवा पिछले पांच

सालों की तुलना में सबसे साफ रही। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सिर्फ सितंबर ही नहीं, पूरे साल की हवा भी बेहतर है। जनवरी से सितंबर 28 तक की अवधि में इस साल 194 दिन ऐसे रहे जब दैनिक औसत एक्क्यूआई 200 से कम रहा। इससे पहले 2025 में 187 दिन, 2024 में 188 दिन, 2023 में 193 दिन और 2022 में सिर्फ 146 दिन ही हवा इस श्रेणी में थी। वहीं, खराब हवा वाले दिनों में भी

बड़ी गिरावट आई है। जनवरी से सितंबर 2026 में खराब से लेकर बेहद खराब प्लस वाले दिन सिर्फ 79 दिन रहे, जो पिछले पांच सालों में सबसे कम रहे हैं। 2025 में 86 दिन, 2024 में 86 दिन, 2023 में 80 दिन और 2022 में 127 दिन हवा बहुत खराब श्रेणी में रही थी। रिपोर्ट के मुताबिक पीएम2.5 के स्तर में भी सुधार देखा गया है। जनवरी से सितंबर तक दिल्ली में पीएम2.5 का

औसत 69 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा, जो 2022 के बाद से सबसे कम है। पिछले साल 2025 में भी 69 था, 2024 में 81, 2023 में 73 और 2022 में 80 माइक्रोग्राम था। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने कहा कि वह दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण के लिए सभी संबंधित पक्षों के साथ मिलकर काम कर रहा है और आने वाले दिनों में हवा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने की कोशिश की जा रही है।

राहुल गांधी मानहानि मामले में फिर टली सुनवाई

सुल्तानपुर (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह पर आपतिजनक टिप्पणी करने के आरोप में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष व रायबरेली सांसद राहुल गांधी के खिलाफ दायर मानहानि केस में बृहस्पतिवार दो बजे सुनवाई टल गई। परिवादी भाजपा नेता विजय मिश्र के अधिवक्ता संतोष पांडेय ने अस्थिर होने का हवाला दिया, जिस पर कोर्ट ने छह अक्टूबर सुनवाई की तिथि नियत की है। इससे पहले 21 सितंबर को अधिवक्ता संतोष पांडेय ने आशिक बहस की जो पूरी नहीं हो पाई। वहीं राहुल गांधी के अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ल ने बताया कि परिवादी की बहस पूरी होने पर वे बहस करेंगे। राहुल गांधी पर वर्ष 2018 में भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष व मौजूदा केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ बंगलुरु में आपतिजनक टिप्पणी करने का आरोप है। राहुल गांधी के खिलाफ चार अगस्त 2018 को जिला सहकारी बैंक के पूर्व चेयरमैन व भाजपा नेता विजय मिश्र ने मानहानि का परिवाद कोर्ट में दायर किया था। 27 नवंबर 2023 को कोर्ट ने राहुल गांधी को विचारण के लिए अदालत में तलब किया था। इसके बाद राहुल गांधी ने 20 फरवरी 2024 को कोर्ट में हाजिर होकर जमानत कराई थी। 25-25 हजार के दो जमानतदार उन्होंने लगाए थे। 26 जुलाई 2024 को कोर्ट में राहुल गांधी का बयान दर्ज हुआ था। दोबारा 20 फरवरी 2026 को सीआरपीसी की धारा 313 बयान दर्ज कराया था। इसके बाद परिवादी विजय मिश्र ने राहुल गांधी की वायस सैम्यल का मिलान कराने के लिए अर्जी दी थी, जिसे ट्रायल कोर्ट ने दो मई को खारिज कर दिया था। इसके खिलाफ दायर निगरानी अर्जी भी सेशन कोर्ट से 15 जुलाई को खारिज कर दी गई थी। राहुल गांधी के वायस सैम्यल का विधि विज्ञान प्रयोगशाला से मिलान कराने की अर्जी ट्रायल कोर्ट व सेशन कोर्ट से खारिज होने के आदेश को चुनौती देने वाली परिवादी भाजपा नेता विजय मिश्र की याचिका हाईकोर्ट ने भी सितम्बर माह में खारिज कर दी थी।

सीजेपी प्रमुख दीपके का मारक वीडियो वायरल, दिया बड़ा संदेश

मुंबई में सीईसी के खिलाफ बड़े आंदोलन की तैयारी

मुंबई, एजेंसी।

कॉंग्रेस जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रमुख अभिजीत दीपके इन दिनों अपनी पार्टी के आगामी आंदोलन की तैयारियों के सिलसिले में देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में हैं। यह आंदोलन 2 अक्टूबर को मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रस्तावित है, जिसके लिए कॉंग्रेसियों को शिवाजी मैदान में शाम 4 बजे एकत्रित होने का आह्वान किया गया है। इसी बीच, दीपके का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह रुमाल का नकाब बांधे सड़क पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं। दरअसल, कॉंग्रेस जनता पार्टी नाम का सोशल मीडिया हैंडल बनाने के बाद से अभिजीत दीपके रातों-रात खासे मशहूर हो गए हैं। सोशल मीडिया पर उनके करोड़ों



फॉलोअर्स हैं। जहां एक ओर उनके प्रशंसकों की एक विशाल फौज है, वहीं आलोचकों की भी कमी नहीं। ऐसे में दीपके के लिए अब आम लोगों की तरह खुलकर घूमना-फिरना मुश्किल हो गया है। हाल ही में मुंबई में ट्रैफिक जाम के कारण

जब उनकी गाड़ी अगो नही बढ पा रही थी, धमैरू प्रधान को उनके पद से इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया था। इस सफलता से सीजेपी के हैसले बुलंद हैं। अब संगठन ने सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन चलाने की घोषणा की है, जिसकी शुरुआत 2 अक्टूबर को मुंबई के शिवाजी मैदान में होगी। सीजेपी ज्ञानेश कुमार से एसआईआर प्रक्रिया में कथित गड़बड़ी का आरोप लगाकर उनके इस्तीफे की मांग कर रही है। हालांकि, मुंबई पुलिस ने शिवाजी मैदान में आंदोलन की अनुमति देने से इनकार कर दिया है, लेकिन सीजेपी अभी भी वहीं प्रदर्शन करने पर अड़ी है। संभूत मुंबई चलो के नारे के साथ लगातार पोस्टर साझा कर रहा है। मुंबई के बाद देश के अन्य शहरों और राजधानी दिल्ली में भी आंदोलन चलाने की बात कही गई है।

राहुल गांधी को गिरिराज की चुनौती....अपने दम पर यूपी चुनाव लड़कर दिखाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक बयानबाजी तेज हुई है। केंद्रीय मंत्री और बीजेपी नेता गिरिराज सिंह ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधकर उन्हें उत्तर प्रदेश में अपने दम पर चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। केंद्रीय मंत्री सिंह ने दावा किया कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच गठबंधन को लेकर मतभेद सामने आ रहे हैं। बीजेपी नेता सिंह ने कहा कि राहुल गांधी में अपने दम पर चुनाव लड़ने की हिम्मत नहीं है और यदि वह उत्तर प्रदेश में बिना

गठबंधन के मैदान में उतरे हैं, तब कांग्रेस प्रत्याशियों की जमानत जप्त होगी। उन्होंने विपक्षी दलों पर बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर भ्रम फैलाने का आरोप लगाया। उनके इन दावों की राजनीतिक विपक्ष की ओर से अलग-अलग प्रतिक्रिया रही है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर संभावित गठबंधन पर बातचीत कर रही हैं। दोनों दलों के बीच सीटों के बंटवारे और चुनावी रणनीति को लेकर मतभेदों की खबरें सामने आई हैं, हालांकि

दोनों पक्षों ने गठबंधन की संभावनाओं को लेकर बातचीत जारी रखी है।

वहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को लेकर केंद्रीय मंत्री सिंह ने विपक्षी इंडिया गठबंधन की बैठक के संदर्भ में टिप्पणी की। उन्होंने आरोप लगाया कि अलग-अलग विपक्षी दल अपने राजनीतिक हितों के कारण एक साथ आ रहे हैं। 30 सितंबर को हुई इंडिया गठबंधन की बैठक में राहुल गांधी, ममता बनर्जी और अन्य विपक्षी नेताओं ने चुनाव आयोग से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की थी।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने सोनिया गांधी की ओर से नीतीश कुमार को लेकर की गई टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देकर आरोप लगाया कि नीतीश कुमार ने विपक्षी एकता के बजाय राहुल गांधी को आगे बढ़ाने की कोशिश को समझ लिया था। यह टिप्पणी उन्होंने विपक्षी गठबंधन की राजनीति के संदर्भ में की। केप्टन स्मित माछर की बहादुरी का जिक्र कर आगे बढ़े हैं। 30 सितंबर को हुई इंडिया गठबंधन की बैठक में राहुल गांधी, ममता बनर्जी और अन्य विपक्षी नेताओं ने चुनाव आयोग से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की थी।

यूपी में ‘ अल नीनो ’ का नहीं रहा असर, जमकर बरसे बादल, 18 साल का रिकॉर्ड टूटा

लखनऊ, एजेंसी।

उत्तर प्रदेश में इस साल मॉनसून की बारिश को लेकर लगाया गया पूर्वानुमान गलत साबित हुआ है। 'अल नीनो' के प्रभाव के चलते राज्य में सामान्य से कम बारिश होने की आशंका निर्मूल साबित हुई और राज्य के कई जिलों में जून से सितंबर तक के मॉनसून सीजन के प्रमुख चार महीनों में पिछले 18 सालों में सबसे अधिक बारिश दर्ज की गई। राज्य के 37 जिलों में औसत से कम बारिश हुई, जबकि 37 जिलों में औसत से अधिक वर्षा दर्ज की गई। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़ों के मुताबिक, एक जून से 30 सितंबर के बीच उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में औसत बारिश 802.9 मिलीमीटर हुई, जबकि

सामान्य बारिश 746.2 मिलीमीटर होती है। साल 2008 के बाद यह पहली बार है जब यूपी के हर जिले में औसत से ज्यादा बारिश हुई है। सन 2008 में सामान्य से 12 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई थी। यूपी में में इस बार मॉनसून करीब दो सप्ताह की देरी से पहुंचा था। इसके बाद 2008 में सामान्य से 12 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई थी। यूपी में में इस बार मॉनसून करीब दो सप्ताह की देरी से पहुंचा था। इसके बाद 2008 में सामान्य से 12 प्रतिशत अधिक वर्षा दर्ज की गई।

अनुकूल स्थितियां बनने से औसत बारिश 291.3 मिलीमीटर हो गई। इसके बाद सितंबर में भी यह तेजी बनी रही और 250.2 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र, लखनऊ के सीनियर साइंटिस्ट मोहम्मद दानिश के अनुसार, बाद के दो महीनों में हुई ज्यादा बारिश ने शुरुआती दो महीनों की कमी पूरी कर दी। इस मॉनसून सीजन में उत्तर प्रदेश के नौ जिलों बांदा, चित्रकूट, कन्नौज, कानपुर शहर, एटा, हमीरपुर, मेहोबा, मेरठ और संभल में 60 प्रतिशत से अधिक बारिश दर्ज की गई। लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी और बरेली सहित 17 अन्य जिलों में 20 फीसदी से 59 फीसदी तक अधिक बारिश दर्ज की गई। यूपी के अयोध्या, बाराबंकी, बस्ती, सीतापुर, रायबरेली और झाब सहित 29 जिलों में बारिश सामान्य रही।

